Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-40 अंक-44 | सम्पादक | दिनांक 08 फरवरी से 14 फरवरी 2017 तक | वार्षिक शुल्क 150 रुपये

कल्पादि सम्वत् 1972949116 | मुन्ना कुमार शर्मा | माघ शुक्ल द्वादशी से फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी सम्वत् 2073 तक | पृष्ठ संख्या 12

लोकतंत्र और संविधान... पृष्ठ-3

खीरे के आठ अद्भुत....... पृष्ठ-4

धार्मिक आधार पर बांग्लादेश... पृष्ठ-6

वन्दे मातरम एण्ड इस्लाम.... पृष्ठ-8

अनदेखी पड़ रही जान... पृष्ठ-12

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह के अवसर पर बाल प्रतिभा खोज प्रतियोगिता आयोजित, हिन्दुत्व के लिये उल्लेखनीय कार्य करने वाली विभूतियां सम्मानित

बालवीर हकीकत राय की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए

हिन्दू महासभा तिथि दर्शक का लोकार्पण करते हिन्दू महासभा नेता

नई दिल्ली ०१ फरवरी २०१७, बसंत पचमी के दिन अखिल भारत हिन्दू महासभा, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में पार्टी मुख्यालय हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये बलिदान होने वाले बालवीर हकीकत राय का बलिदान दिवस समारोह पूरी भव्यता के साथ आयोजित की गई। सर्वप्रथम मां सरस्वती की पूजा व हवन किया गया। तत्पश्चात् हिन्दू महासभा भवन स्थित बालवीर हकीकत राय, स्वातंत्र्य वीर सावरकर एवं भाई परमानन्द की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया तथा श्रद्धासुमन अर्पित किया गया। तत्पश्चात बालवीर हकीकत राय व बलिदान दिवस समारोह की शुरूआत हुई। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक व राष्ट्रीय महांमत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। मंच संचालन राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने किया। दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष सुनील कुमार ने गुलदस्ता भेंटकर समारोह की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक व समारोह के विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा का स्वागत किया। अपने संबोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने सभी उपस्थित जनों को समारोह की शुभकामनाएं दीं तथा कहा कि हमें बालवीर हकीकत राय के त्याग, बलिदान व साहस से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने प्राण त्याग दिये, परन्तु हिन्दू धर्म का त्याग करना स्वीकार नहीं किया। समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि वीर हकीकत राय ने त्याग व बलिदान के माध्यम से राष्ट्र एवं हिन्दू समाज के सामने एक आदर्श, प्रस्तुत किया है। उन्होंने हमें सिखाया है कि हमें हिन्दुत्व के मार्ग से कभी भी अलग नहीं होना चहिए। उनका मानना था कि हिन्दू धर्म दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धर्म है, हमें अपने धर्म पर गर्व करना चाहिए। उन्होंने हिन्दुस्तान के निवासियों का आह्वान किया कि हमें अखंड हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करना है तथा हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान का विकास करना है। अखिल भारत हिन्दू महासभा वीर हकीकत राय के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिये मृतसंकल्य है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने सभी अतिथियों व उपस्थितजनों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हम हिन्दू रक्षा व राष्ट्र रक्षा का संकल्प लें। बाल प्रतिभा खोज प्रतियोगित में श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम, भाई परमानन्द शिक्षा निकेतन, बेबी पब्लिक स्कूल, भंगेल, सैनिक माडल स्कूल, युवा शाक्ति माडल स्कूल, बेबी पब्लिक स्कूल, गेझा, न्यू एज पब्लिक स्कूल सहित दिल्ली–एनसीआर के दो दर्जन विद्यालयों के बच्चे सम्मिलित हुए। बच्चों ने गायन, वादन, नृत्य आदि के माध्यम से कला का प्रदर्शन किया। उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले बच्चों को मेडल देकर पुरस्कृत किया गया। समारोह में साध्वी पूजानंद गिरि, योगेन्द्र वर्मा, मोहन लाल वर्मा, प्रवीन त्यागी, धर्मपाल सिवाच, महेन्द्र भाई परमार, सीपी शर्मा, भुवन सोनवाल, लीला शाक्य, प्रताप सूर्यवंशी, अनिलकांत भटनागर, महेश कुलकर्णी, राजेन्द्र पटेल, ईश्वर गुप्ता, ललित भारद्वाज, अनिल पवार, के. राजशेखर, कन्हैया लाल रायकबार

शेष पृष्ठ १० पर

अखिल भारत हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति ने राम मंदिर, धारा-370, समान नागरिक कानून व गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध के मुद्दे पर राष्ट्रीय आंदोलन करने का निर्णय लिया

नई दिल्ली, ०१ फरवरी २०१७ आज नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय हिन्दू महासभा भवन में अखिल भारत हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने किया। बैठक का संचालन राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने किया। बैठक में दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा, असम, उड़ीसा सहित देश के विभिन्न राज्यों से सैकड़ों प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति ने सर्वसम्मति से अयोध्या के राम जन्म स्थान पर भव्य राम मंदिर बनाने, धारा–३७० को समाप्त करने, देश में समान नागरिक कानून लागू करने व पूरे देश में गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के मुद्दे पर पूरे भारत में राष्ट्रीय आंदोलन चलाने का प्रस्ताव पारित किया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों ने नरेन्द्र मोदी की सरकार द्वारा देशवासियों से की गई वादाखिलाफी के विरूद्ध प्रस्ताव पारित किया तथा सरकार की जनविरोधी नीतियों की निंदा की। कार्यकारिणी ने उत्तर प्रदेश की सभी सीटों पर हिन्दू महासभा प्रत्याशियों की सूची तय कर दी। उपस्थित सदस्यों ने भाजपा द्वारा जम्मू–कश्मीर में महबूबा मुती की पीडीपी से तालमेल कर सरकार बनाने की तीव्र निंदा की एवं कहा कि केन्द्र व जम्मू–कश्मीर की सरकार सीमा पार घुसपैठ व आतंकवाद को समाप्त करने में पूर्ण विफल रही है। कार्यकारिणी ने केन्द्र सरकार से मांग की हैं कि कश्मीर से हिन्दू विस्थापियों की तुरंत वापसी करायी जाये। हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत का स्वागत किया। तथा डोनाल्ड ट्रंप द्वारा सात मुस्लिम देशों के नागारिकों के अमेरिका में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने के निर्णय का पूर्ण समर्थन किया है। साथ–ही–साथ हिन्दू महासभा नेताओं ने अमेरिकी राष्ट्रपति से आतंकवाद के जनक व संस्थापक पाकिस्तान पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। बैठक में राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी, अनिल पवार, उत्तर प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष, योगेन्द्र वर्मा, मध्य प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, प्रदेश संगठन मंत्री, कन्हैया लाल रायकबार, हरियाणा प्रदेश के अध्यक्ष धर्मपाल सिवाच, प्रदेश प्रवक्ता ललित भारद्वाज, तमिलनाडु के प्रदेशाध्यक्ष के. राजशेखर, केरल प्रदेशाध्यक्ष सुब्रहमण्यम पोट्टी, साध्वी पूजानन्द गिरि, शिवनाथ शर्मा, विजय मिश्रा, गुजरात प्रदेशाध्यक्ष महेन्द्र भाई परमार, सीपी शर्मा, भुवन सोनवाल, ओमदेव अवाना, राजेन्द्र पटेल, प्रवीन त्यागी, झारखंड प्रदेश महामंत्री ईश्वर गुप्ता, लीला शाक्य, प्रताप सिंह सूर्यवंशी, राघव मिश्रा, संतोश मिश्रा, प्रद्युमन राय, महेश कुलकर्णी सहित हिन्दू महासभा के सैकड़ों पदाधिकारी सम्मिलित थे।

उत्तर प्रदेश चुनाव घोषणापत्र जारी करते हिन्दू महासभा नेता

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति बैठक में हिन्दू महासभा नेता व कार्यकर्त्ता

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह 2017

वीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह का बैनर

यज्ञ में सम्मिलित हिन्दू महासभा के नेता व कार्यकर्ता

यज्ञ के बाद आरती करते हुए हिन्दू महासभा के नेता व कार्यकर्ता

भारत माता की जय का घोष करते हुए हिन्दू महासभा नेता

भाई परमानन्द की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए

वीर सावरकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए

श्री वीरेश त्यागी का सम्बोधन

बालवीर हकीकत राय के चित्र पर दीप प्रज्वलित करते राष्ट्रीय अध्यक्ष

बालवीर हकीकत राय के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए नेता

हकीकत राय के चित्र पर पुष्प अर्पित करते मुन्ना कुमार शर्मा

समारोह में उपस्थित जनसमूह

स्कूल के बच्चों द्वारा देशभक्ति गीत पर नाट्य

स्कूल के बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए

भगवद्गीता का पाठ करते बच्चे

समारोह में उपस्थित जन समूह

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 08 फरवरी से 14 फरवरी 2017 तक

अध्यक्षीय

भीड़तंत्र के आगे झुकतीं सरकारें

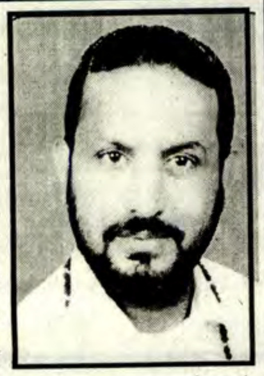

आखिरकार तमिलनाडु में जल्लीकट्टू का आयोजन हो ही गया। २०१४ से बैलों को साधने वाले इस खेल पर सर्वोच्च न्यायालय ने प्रतिबंध लगाया था। पशुओं के अधिकार व संरक्षण के लिए कार्य कर रही संस्था पेटा की याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया था। पेटा समेत पशुओं के हक की आवाज उठाने वाले अन्य लोगों का तर्क था कि इस खेल के कारण मूक सांडों, बैलों पर अत्याचार किया जाता है। उन्हें तेज दौड़ने के लिए उकसाया जाता है और इसके लिए कभी उन पर नुकीली चीजें चुभाई जाती हैं, कभी आंखों में मिर्ची डाली जाती है और कभी शराब भी पिलाई जाती है। ये आरोप बेबुनियाद नहीं हैं। बैलों की दौड़, मुर्गा, बटेर आदि की लड़ाई, ऊंट दौड़ मनोरंजन के नाम ऐसे तमाम आयोजनों में इंसान अपनी जीत के लिए पशुओं पर अत्याचार करने से बाज नहीं आता। सर्कस, जादू के खेलों में भी जानवरों के इस्तेमाल पर इसलिए बार–बार आपत्तियां उठाई गईं कि इनमें पशुओं पर जोर–जबरदस्ती की जाती है। पशु मूक होते हैं, वे अपना दर्द बोलकर व्यक्त नहीं कर सकते, न ही अपने इस्तेमाल पर ऐतराज कर सकते हैं। ज्यादा से ज्यादा वे कभी अपने मालिक की बात न सुनकर अडिल रवैया अपनाते हैं, तो बदले में उन्हें चाबुक मिलता है या भोजन न देने की सजा मिलती है। इंसान की विकास यात्रा में जानवर उसके साथ हमेशा रहा है। कभी उसका सहयोगी बनकर, कभी उसका गुलाम बनकर। इतिहास में एक दौर बाकायदा पशुपालन के नाम किया गया है और यह माना गया है कि पशु को साधकर ही इंसान ने आगे का सफर तय किया। आज उसी साथ और उसी साध को परंपरा का नाम दिया जा रहा है और उसकी दुहाई दी जा रही है। परंपराएं बनती हैं और समय के अनुसार बदलती हैं या खत्म होती हैं। हर परंपरा को जातीय अस्मिता के साथ जोड़ा जाता तो इंसान न समुद्र पार की यात्रा करता, न अंतरिक्ष का संधान कर पाता। लेकिन यह देखकर दुख हो रहा है कि आज देश के विकसित और शिक्षित राज्यों में से एक तमिलनाडु में भावनाओं को भुनाने और परंपरा को अस्मिता का सवाल बनाने का खेल हो रहा है। चेन्नई के मरीना तट पर जल्लीकट्टू पर रोक हटाने के लिए विरोध प्रदर्शन प्रारंभ हुआ और सोशल मीडिया के कारण देखते ही देखते जनसैलाब उमड़ पड़ा। जनता का ऐसा झुकाव देखकर तमाम राजनीतिक दल भी उसी ओर लपके, हालांकि भीड़ ने इस अवसर पर किसी राजनीतिक दल को हावी होने का मौका नहीं दिया। भीड़ अपना नेता खुद ही थी और एजेंडा भी उसी ने बनाया था। जल्लीकट्टू से प्रतिबंध हटाने की मांग तमिल स्वाभिमान, हिंदी विरोध जैसे कोनों को छू आई। हाल ही में पदभार संभाले मुख्यमंत्री पनीरसेल्वम के लिए जल्लीकट्टू एक बड़ी चुनौती लेकर आया, बैल के सींग से सिक्के निकालने जैसी कठिन। वे दिल्ली आए, प्रधानमंत्री से मिले। मोदीजी के लिए भी यह कठिन खेल है। अगर अब इस मांग को पूरा न कर पाएं तो तमिलनाडु की जनता के लिए तमिल विरोधी बन जाएंगे, जो वे कतई नहीं चाहते होंगे। भाजपा के खाता खोलने की इच्छा अभी बाकी है। लिहाजा मोदीजी ने ट्वीट किया कि वे तमिलनाडु की समृद्ध संस्कृति और परंपरा का सम्मान करते हैं। इधर तमिलनाडु सरकार ने जल्लीकट्टू के लिए एक अध्यादेश पेश किया, जिसे राज्यपाल ने तुरंत मंजूरी दे दी। केंद्र सरकार की स्वीकृति मिलते ही अध्यादेश राष्ट्रपति के पास पहुंच गया। जल्लीकट्टू तमिलनाडु में एक बार फिर आयोजित हुआ, लेकिन प्रदर्शनकारी अब भी शांत नहीं हुए हैं। वे इस पर स्थायी कानून चाहते हैं। अब इसी मुद्दे पर सरकार को घेरा जा रहा है। तमिलनाडु सरकार इस पर कानून बना पाती है या नहीं, यह बाद में पता चलेगा। फिलहाल यह तो समझ आ गया कि भीड़तंत्र के आगे लोकतांत्रिक सरकार झुक रही है। परंपरा के नाम पर जिद मनवाने का परिणाम देखकर अब महाराष्ट्र में बैलगाड़ी दौड़ और कर्नाटक में भैंसा दौड़ के आयोजन पर प्रतिबंध हटाने की मांग उठने लगी है। भारत में सती, बालविवाह जैसी प्रथाएं, परंपराएं भी विद्यमान रही हैं। कड़े प्रयासों के बाद सती प्रथा तो खत्म हो गई, लेकिन बालविवाह परंपरा के नाम पर अब भी अत्याचार हो रहे हैं। अबोध बच्चे भी पशुओं की तरह अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं कर सकते। अब अगर इन कुप्रथाओं को दोबारा चलन में लाने के लिए भीड़ एकत्र हुई तो क्या सरकारें उनके आगे भी झुक जाएंगी। क्या कोई परंपरा इंसान की जान से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है, और क्या पशुओं के साथ इंसानी नाता ऐसी परंपराओं से ही जाहिर किया जा सकता है, इन सवालों पर भीड़ की मानसिकता से अलग हटकर विचार करना चाहिए।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

लोकतंत्र और संविधान को बचाने का लें संकल्प

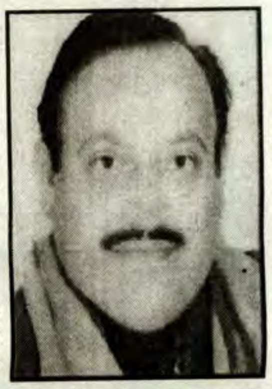

यही वह २६ जनवरी का गौरवशाली ऐतिहासिक दिन है जब भारत ने आजादी के लगभग २ साल ११ महीने और १८ दिनों के बाद इसी दिन हमारी संसद ने भारतीय संविधान को पास किया। खुद को संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करने के साथ ही भारत के लोगों द्वारा २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। ६८ वर्षों के बावजूद आज भी हमारा गणतंत्र कितनी ही कंटीली झाड़ियों में फँसा हुआ प्रतीत होता है। अनायास ही हमारा ध्यान गणतंत्र की [illegible]पना से लेकर क्या पाया, क्या खोया के लेखे–जोखे की तरफ खिंचने लगता है। इस ऐतिहासिक अवसर को हमने मात्र आयोजनात्मक स्वरूप दिया है, अब इसे प्रयोजनात्मक स्वरूप दिये जाने की जरूरत है। इस दिन हर भारतीय को अपने देश में शांति, सौहार्द और विकास के लिये संकल्पित होना चाहिए। कर्तव्य–पालन के प्रति सतत् जागरूकता से ही हम अपने अधिकारों को निरापद रखने वाले गणतंत्र का पर्व सार्थक रूप में मना सकेंगे। और तभी लोकतंत्र और संविधान को बचाए रखने का हमारा संकल्प साकार होगा। गणतंत्र के सूरज को राजनीतिक अपराधों, घोटालों और भ्रष्टाचार के बादलों ने घेर रखा है। हमें किरण–किरण जोड़कर नया सूरज बनाना होगा। हमने जिस संपूर्ण संविधान को स्वीकार किया है, उसमें कहा है कि हम एक संपूर्ण प्रभुत्व–संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य हैं। यह सही है और इसके लिए सर्वप्रथम जिस इच्छा–शक्ति की आवश्यकता है, वह हमारी शासन–व्यवस्था में सर्वात्मना नजर आनी चाहिए और ऐसा नहीं हो पा रहा है, तो उसके कारणों की खोज और उन्हें दूर करने के प्रयत्न इस गणतंत्र दिवस पर चर्चा का मुख्य मुद्दा होना चाहिए। एक राष्ट्र के रूप में आज से ६८ साल पहले हमने कुछ संकल्प लिए थे जो हमारे संविधान और उसकी प्रस्तावना के रूप में आज भी हमारी अमूल्य धरोहर हैं। संकल्प था एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, समतामूलक और लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का जिसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार होगा। लेकिन यह भी सच है कि इन ६८ सालों में जहां हमने बहुत कुछ हासिल किया, वहीं हमारे इन संकल्पों में बहुत कुछ आज भी आधे–अधूरे सपनों की तरह हैं। भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, सांप्रदायिक वैमनस्य, कानून–व्यवस्था, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं जैसे तमाम क्षेत्र हैं जिनमें हम आज भी अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर पाए हैं। हालांकि इन्हें लेकर हमारे कदम लगातार सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ रहे हैं। इसके लिए जरूरी है कि एक राष्ट्र के रूप में हम इन संकल्पों को लगातार याद रखें और दोहराएं। समाजवादी मूल्यों से प्रभावित एक समतावादी समाज की कल्पना और उसे तैयार करने के हमारे संकल्प सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक तीनों स्तर पर अब तक पूर्णतः सफल नहीं रहे। उदाहरण के लिए, जब हमने समाज से जातिगत भेद–भाव को दूर करने का प्रयास किया तो उसे राजनैतिक पनाह मिल गई। नतीजन, दबे–कुचलों के बीच भी कई सामंत फलने–फूलने लगे। कुछ शोषित शक्तिसंपन्न तो जरूर हुए पर शोषित समाज वहीं–का–वहीं रहा। फर्क सिर्फ इतना हुआ कि कल तक जो समाज उपेक्षित था, आज तो वोट–बैंक बन गया। यही कारण है कि हर बार की तरह इस बार के पांच राज्यों के चुनाव में जाति एवं धर्म के आधार पर वोट की राजनीति न करने का प्रस्ताव सामने आया है और यह चुनाव आयोग के लिये एक चुनौती के रूप में खड़ा है। सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर देश एक संक्रमण–काल से गुजर रहा है। सर्वव्यापी भ्रष्टाचार एक राष्ट्रव्यापी मुद्दा बन चुका है। अचानक घोटालों की संख्या और उनके वित्तीय आकार ने मानो इस राजनैतिक व्यवस्था में हमारे विश्वास की जड़ें हिला दी हैं। हर घोटाले के साथ जुड़े चेहरे जब उजागर होते हैं। आम आदमी विश्वास करे तो किस पर इस हमाम में तो सभी नंगे दिखते हैं अब चाहे वो राजनैतिक गुरु हो या आध्यात्मिक। आज हमारी समस्या यह है कि हमारी ज्यादातर प्रतिबद्धताएं व्यापक न होकर संकीर्ण होती जा रही हैं जो कि राष्ट्रहित के खिलाफ है। राजनैतिक मतभेद भी नीतिगत न रह कर व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। नतीजन, लोकतांत्रिक परम्पराओं की दुहाई देते हुए भ्रष्टाचार एवं कालेधन जैसे गंभीर मुद्दों पर नियंत्रण के लिये की गयी नोटबंदी भी सकारात्मक रूप नहीं ले पायी। भ्रष्टाचार एवं कालेधन पर विरोध करने वाले भी सिर्फ राजनैतिक गुटबंदी और गतिरोध का मुजाहिरा ही बन कर रह गये हैं। लोकतंत्र में जनता की आवाज की ठेकेदारी राजनैतिक दलों ने ले रखी है, पर ईमानदारी से यह दायित्व कोई भी दल सही रूप में नहीं निभा रहा है। हम एक असरदार सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्रांति की आस लगाए बैठे हैं। इसे शांतिपूर्ण तरीके से हो ही जाना चाहिए बिना किसी बाधा के। गणतंत्र दिवस का अवसर इस तरह की सार्थक शुरूआत के लिये शुभ और श्रेयस्कर है। गणतंत्र बनने से लेकर आज तक हमने अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इन पर समूचे देशवासियों को गर्व है। लेकिन साक्षरता से लेकर महिला सुरक्षा जैसे कई महत्वपूर्ण मोर्चों पर अभी भी बहुत काम करना बाकी है। आज उद्देश्यों की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए औरों की बैसाखियां नहीं चाहिए। हमें खुद सीढ़ियां चढ़कर मंजिल तक पहुंचना है। संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य होने के महत्व को सम्मान देने के लिये मनाया जाने वाला यह राष्ट्रीय पर्व मात्र औपचारिकता बन कर न रह जाये, इस हेतु चिन्तन अपेक्षित है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

खीरे के आठ अद्भुत स्वास्थ्यवर्धक लाभ

वैकल्पिक चिकित्सा के प्रकार और फायदे–खीरा सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। इसके सौन्दर्य लाभ के बारे में तो आपने काफी कुछ सुना होगा, लेकिन यह आपकी सेहत के लिए कितना और किस तरह फायदेमंद है इसके बारे में आज हम आपको बताते हैं। कम फैट व कैलोरी से भरपूर खीरे का सेवन आपको कई गंभीर बीमारियों से बचाने में सहायक है।

सलाद के तौर पर प्रयोग किए जाने वाले खीरे में इरेप्सिन नामक एंजाइम होता है, जो प्रोटीन को पचाने में सहायता करता है। खीरा पानी का बहुत अच्छा स्रोत होता है, इसमें ९६ प्रतिशत पानी होता है। खीरे में विटामिन ए, बी१, बी६, सी, डी पौटेशियम, फास्फोरस, आयरन आदि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। नियमित रूप से खीरे के जूस शरीर को अंदर व बाहर से मजबूत बनाता है। खीरा कब्ज से मुक्ति दिलाने के साथ ही पेट से जुड़ी हर समस्या में फायदेमंद साबित होता है। इसके अलावा एसिडिटी, छाती की जलन में नियमित रूप से खीरा खाना लाभप्रद होता है। जानिए खीरे के ऐसे ही स्वास्थ्यवर्धक लाभ के बारे में जिनके बारे में आपने पहले कभी नहीं सुना होगा–

बालों व त्वचा की देखभाल : खीरे में सिलिकन व सल्फर बालों की ग्रोथ में मदद करते हैं। अच्छे परिणाम के लिए चाहें तो खीरे के जूस को गाजर व पालक के जूस के साथ भी मिलाकर ले सकते हैं। फेस मास्क में शामिल खीरे के रस त्वचा में कसाव लाता है। इसके अलावा खीरा त्वचा को सनबर्न से भी बचाता है। खीरे में मौजूद एस्कोरबिक एसिड व कैफीन एसिड पानी की कमी (जिसके कारण आँखों के नीचे सूजन आने लगती है) को कम करता है।

कैंसर से बचाए : खीरा के नियमित सेवन से कैंसर का खतरा कम होता है। खीरे में साइकोइसोल– एरीकिल, लैरीकिल और पाइनोरिकोल तत्व होते हैं। ये तत्व सभी तरह के कैंसर जिनमें स्तन कैंसर भी शामिल है, के रोकथाम में कारगर हैं।

मासिक धर्म में फायदेमंद : खीरे का नियमित सेवन से मासिक धर्म में होने वाली परेशानियों से छुटकारा मिलता है। लड़कियों को मासिक धर्म के दौरान काफी परेशानी होती है, वो दही में खीरे को कसकर उसमें पुदीना, काला नमक, काली मिर्च, जीरा और हींग डालकर रायता बनाकर खाएँ इससे उन्हें काफ़ी आराम मिलेगा।

मधुमेह व रक्तचाप में फायदेमंद : मधुमेह व रक्तचाप की समस्या से बचने के लिए नियमित रूप से खीरे का सेवन फायदेमंद हो सकता है। खीरे के रस में वो तत्व हैं जो पैनकियाज को सक्रिय होने पर शरीर में इंसुलिन बनती है। इंसुलिन शरीर में बनने पर मधुमेह से लड़ने में मदद मिलती है। खीरा खाने से कोलस्ट्रोल का स्तर कम होता है। इससे हृदय संबंधी रोग होने की आशंका कम रहती है। खीरा में फाइबर, पोटैशियम और मैगनीशियम होता है जो ब्लडप्रेशर दुरुस्त रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। खीरा हाई और लो ब्लड प्रेशर दोनों में ही एक तरह से दवा का कार्य करता है।

वजन कम करने में मददगार : जो लोग वजन कम करना चाहते हैं, उन लोगों के लिए खीरे का सेवन काफी फायदेमंद रहता है। खीरे में पानी अधिक और कैलोरी कम होती है, इसलिए वजन कम करने के लिए यह अच्छा विकल्प हो सकता है। जब भी भूख लगे तो खीरे का सेवन अच्छा हो सकता है। सूप और सलाद में खीरा खाएँ। खीरा में फाइबर होते हैं जो खाना पचाने में मददगार होते हैं।

आँखों के लिए लाभकारी : अक्सर फेसपैक लगाने के बाद आँखों की जलन से बचने के लिए खीरे को स्लाइस की तरह काटकर आँखों की पलक के ऊपर रखते हैं। इससे आँखों को ठंडक मिलती है। खीरा की तासीर जलन कम करने की होती है। जरूरी नहीं है कि सिर्फ फेसपैक लगाने के बाद ही ऐसा कर सकते हैं। जब भी आँखों में जलन महसूस हो तो आप खीरे की मदद ले सकते हैं।

मसूड़े स्वस्थ रखता है : खीरा खाने से मसूड़ों की बीमारी कम होती है। खीरे के एक टुकड़े को जीभ से मुँह के ऊपरी हिस्से पर आधा मिनट तक रोकें। ऐसे में खीरे से निकलने वाला फाइटोकैमिकल मुँह की दुर्गन्ध को खत्म करता है।

जोड़ों की दवा : खीरे में सीलिशिया प्रचुर मात्रा में होता है। इससे जोड़ों को मजबूती मिलती है और टिशु परस्पर मजबूत होते हैं। गाजर और खीरे का जूस मिलाकर पीने पर गठिया बाय रोग में मदद मिलती है। इससे यूरिक एसिड का स्तर भी कम होता है। तो आम सा दिखने वाला खीरा कई गुणों से भरपूर होता है। तो, बिना देर किए आप खीरे को अपने आहार और सलाह का हिस्सा बनाइए।

साभार-आर्य प्रतिनिधि

त्रिफला

त्रिफला तीन पदार्थों को मिलाकर बनता है–एक आमला, दूसरी हरड़ और तीसरा बहेड़ा। आयुर्वेद में त्रिफला को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। इसमें हरड़ जहाँ एक ओर सभी दोषों में संतुलन स्थापित करता है वहीं आँखों और पाचन संस्थान के लिए लाभदायक माना गया है। आमला विटामिन सी का बहुत अच्छा स्रोत होने से एंटी ऑक्सीडेंट का कार्य करता है। बहेड़ा पित्त और कफ के दोषों का निवारण करता है।

त्रिफला सेवन के लाभ–(१) त्रिफला खांसी, सूजन आदि को दूर करने के साथ एंटी–वाइरल, एंटी–कैंसर तथा एंटी–एलर्जिक माना जाता है। (२) अपने घटक आमला के कारण त्रिफला आँखों की अनेक समस्याओं को दूर करता है। (३) त्रिफला बुद्धिवर्धक माना जाता है। (४) शरीर से अतिरिक्त वसा को कम करने में आमला को अत्यधिक उपयोगी माना जाता है। (५) मूत्र नली की पथरी को निकालने में त्रिफला असरदायक है। (६) यह रक्त परिसंचरण को सही करता है तथा उच्च रक्तचाप के नियंत्रण में लाभकारी माना जाता है। (७) त्रिफला शरीर के सभी तंत्रों की सफाई कर त्वचा में चमक लाता है। (८) त्रिफला ऊतकों का वृद्धिकारक एवं स्वास्थ्यवर्धक है। (९) यह हृदय तथा लीवर की वसा को दूर करता है। (१०) त्रिफला दृष्टि, बाल तथा आवाज के लिए अत्यन्त लाभदायक है। (११) स्वास्थ्य के लिए लाभदायक इसके घटकों के कारण लम्बी आयु के लिए इसका सेवन उचित माना गया है। (१२) कब्ज दूर करने में त्रिफला–सेवन अत्यन्त लाभदायक माना गया है।

साभार-आर्य प्रतिनिधि

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक....................................150/- रुपये

द्विवार्षिक..................................300/- रुपये

आजीवन सदस्य........... ....1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

श्रीमद्भगवत गीता

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्।।

परन्तु हे कुन्तीपुत्र! दैवी प्रकृति के आश्रित महात्माजन मुझको सब भूतों का सनातन कारण और नाशरहित अक्षरस्वरूप जानकर अनन्य मन से युक्त होकर निरन्तर भजते हैं।।१३।।

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते।।

वे दृढ़ निश्चयवाले भक्तजन निरन्तर मेरे नाम और गुणों का कीर्तन करते हुए तथा तेरी प्राप्ति के लिये यत्न करते हुए और मुझको बार–बार प्रणाम करते हुए सदा मेरे ध्यान में युक्त होकर अनन्य प्रेम से मेरी उपासना करते हैं।।१४।।

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्।।

दूसरे ज्ञानयोगी मुझ निर्गुण–निराकार ब्रह्म का ज्ञानयज्ञ के द्वारा अभिन्नभाव से पूजन करते हुए भी मेरी उपासना करते हैं और दूसरे मनुष्य बहुत प्रकार से स्थित मुझ विराट्स्वरूप परमेश्वर की पृथक भाव से उपासना करते हैं।।१५।।

अहं क्रतरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्रिरहं हुतम्।।

क्रतु मैं हूँ, यज्ञ मैं हूँ, स्वधा मैं हूँ, ओषधि मैं हूँ, मन्त्र मैं हूँ, घृत मैं हूँ, अगिन मैं हूँ और हवनरूप क्रिया भी मैं ही हूँ।।१६।।

माघ शुक्ल पूर्णिमा का महत्व

माघ पूर्णिमा हिन्दुओं के सबसे पवित्र माने जाने वाली पूर्णिमाओं में से एक महत्वपूर्ण पूर्णिमा है। माघ मास का स्नान पौष पूर्णिमा के साथ ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दु धर्म पंचांग के गयारह–वें महीने 'माघ' में स्नान, दान, धर्म–कर्म का विशेष महत्व होता है इस महीने की पूर्णिमा तिथि को चंद्रमा मघा नक्षत्र में होता है जिस कारण इसे माघ कहा जाता है। माघ के महीने का धार्मिक महत्व भी खूब रहा है इस माह की प्रत्येक तिथि फलदायक मानी गई है। शास्त्रों के अनुसार माघ के महीने में किसी भी नदी के जल में स्नान को गंगा स्नान करने के समान माना गया है।

माघ माह में भारत में नदियों के तट पर स्थित सभी धार्मिक महत्व के स्थानों पर स्नान की विशेष व्यवस्था की जाती है। माघ माह में स्नान का सबसे अधिक महत्व प्रयाग के संगम तीर्थ का होता है। प्रतिवर्ष माध माह के समय प्रयाग में मेला लगता है जो कल्पवास कहलाता है प्रयाग में इस अवधि में कल्पवास बिताने की परंपरा सदियों से चली आ रही है जिसका समापन माघी पूर्णिमा के स्नान के साथ होता है। इस दौरान देश के सभी भागों से आए अनेक श्रद्धालु यहां संगम क्षेत्र में स्नान कर धर्म कर्म के कार्य करते हैं यह कल्पवास पूरे माघ माह तक चलता है जो माघ माह की पूर्णिमा को संपन्न होता है। माघ पूर्णिमा के दिन श्रद्धालु स्नान, दान, पूजा–पाठ, आदि करते हैं।

माघ का वैज्ञानिक दृष्टिकोण : माघ स्नान केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। शरीर को मौसम के अनुकूल बनाने में माघ स्नान बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माघ के महीने में हेमंत ऋतु समाप्ति की ओर तथा शिशिर ऋतु का आरंभ होता है अर्थात ठंड के मौसम समाप्ति की ओर अग्रसर होता है तथा वातावरण में गर्मी का आगमन होने लगता है सूर्य के मकरस्थ होते ही प्रकृति में बदलाव होने लगता है। पेडों पर कोंपले फुटने लगती हैं नव जीवन का संचार होने लगता है। ऐसे में ऋतु के परिवर्तन का असर स्वास्थ्य कोई प्रतिकूल प्रभाव न डाले इसलिए नित्य प्रातः काल में स्नान करने से देह को मजबूति प्राप्त होती है और आने वाले मौसम के अनुकूल हो जाता है।

इस प्रकार इस मौसम में हमें इस बात का बोध होता है कि प्राणि अपने भावों और विचारों को शुद्ध और सात्विक रखे तथा कर्म के प्रति निष्ठावान बना रहे इस प्रकार के आचरण से ही वह प्रतिकूलताओं से बचा रहा सकता है।

माघ पूर्णिमा पर किए गए दान–धर्म और स्नान का विशेष महत्व होता है। इस बार माघी पूर्णिमा १० फरवरी २०१७ को है। पंचांग के अनुसार गयारहवें महीने यानी माघ में स्नान, दान, धर्म–कर्म का विशेष महत्व हे। जब कर्क राशि में चंद्रमा ओर मकर राशि में सूर्य का प्रवेश होता हे तब माघ पूर्णिमा का योग बनता है। इस योग को पुष्य योग भी कहा जाता है। इस स्नान के करने से सूर्य और चंद्रमा युकत दोषों से मुक्ति मिलती है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है कि माघी पूर्णिमा पर खुद भगवान विष्णु गंगाजल में निवास करते हैं। इस बार माघी पूर्णिमा पर सर्वार्थ सिद्धि होती है। इस दिन ही होली का डांडा गाड़ा जाता है। इस दिन भैरव जयंती भी मनाई जाती है।

माघ मास स्वयं भगवान विष्णु का स्वरूप बताया गया है। पूरे महीने स्नान–दान नहीं करने की स्थिति में केवल माघी पूर्णिमा के दिन तीर्थ स्नान किया जाए तो संपूर्ण माघ मास के स्नान का पूर्ण फल मिलता है।

माघ स्नान वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। माघ में हेमंत ऋतु खत्म होने की ओर रहती है तथा इसके साथ ही शिशिर ऋतु की शुरुआत होती है। ऋतु के बदलाव का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर नहीं पड़े इसलिए प्रतिदिन सुबह स्नान करने से शरीर को मजबूती मिलती है। इस दिन वाग्देवी यानी सरस्वती के स्वरूप ललिता महाविद्या की जयंती भी है। इसे होलिका डांडा रोपिणी पूर्णिमा भी कहा जाता है। मंगल को पुष्य नक्षत्र होना भी श्रेष्ठ है। यह आयुष्मान योग है। सर्वार्थसिद्धि योग दिन भर रहेगा। शनि भी वक्री होने से प्रॉपटी, लोहा आदि वस्तुओं की कीमतों में उतार–चढ़ाव का दौर रहेगा। माघ का महीना शिव और शक्ति के साथ मधुमास का सम्मिश्रण है। सृष्टि प्रक्रिया के चक्र में माघी पूर्णिमा का विशेष महत्व बताया गया है। **साभार-सत्य चक्र**

अनेक नगरों में, ईसा मसीह के जन्म दिवस की, खुशियाँ मनाई गई, वहीं रियांग जाति के वनवासी हिन्दू रो रहे थें। क्यों?

१. हिन्दू विरोधी संविधान में, अति उदारवादी नेहरू ने, ईसाईयों तथा मुस्लिमों को भी धर्म प्रचार तथा धर्म परिवर्तन कराने का अधिकार दे दिया।

२. उत्साहित होकर ईसाइयों ने विदेशों से अपार धनराशि मंगाकर असम के पहाड़ी क्षेत्रों, जंगलों, वनवासियों में सेवा की आड़ में धर्म प्रचार करके, भोले भाले–अशिक्षित–गरीबों को गोरक्षक की जगह गोभक्षक बना दिया।

३. ईसाई बनकर वे राष्ट्र द्रोही हो गए। गाय का मांस खाने लगे। संगठित होकर पुलिस–सेना से लड़ने लगे। सामान्य जीवन अस्त–व्यस्त रहने लगा।

४. अलग देश की मांग करने लगे। मजबूरी में नेहरू को नागालैंड –इंदिरा गांधी को मेघालय–राजीव गांधी को मिजोरम बनाना पड़ा। इसके लिए असम को तीन बार विभाजित करना पड़ा।

५. तीनों ईसाई बहुल राज्यों में ईसाई ८५–९० प्रतिशत हैं। हिन्दू दब कर घबराकर रह रहे हैं क्योंकि राज्य सरकारों पर उग्रवादी ईसाई हावी रहते हैं।

६. मिजोरम में रियांग जाति के आदिवासी १० प्रतिशत हैं/थे। इन्होंने धर्म नहीं बदला। ये सच्चे राष्ट्रवादी हैं। इनका ध्यान रखा जाना चाहिए।

७. ईसाई पादरी– उग्रवादी ईसाई संगठन, हिन्दू रियांगों से, दुर्व्यवहार–अत्याचार–अमानवीय कृत्य करने लगे जिससे तंग होकर अक्टूबर १९९७ को, इन्हें पलायन करना पड़ा।

८. केन्द्रीय सरकार ने, त्रिपुरा के जंगलों में, शिविर लगा दिए थे जहां ये ५०००० की संख्या में, १९९७ से नरकीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

९. सर्वोच्च न्यायालय ने, मिजोरम सरकार को, निर्देश दिए हैं कि वह रियांगों का, सुरक्षित रूप से, पुनर्वास करे।

१०. उग्रवादी ईसाई संगठन, विभिन्न तरह की बाधाएं–रुकावटें डालकर इन्हें, अपने गृह राज्य मिजोरम में, लौटने नहीं दे रहे हैं।

११. १९ वर्षों से शिविरों में रहने वाले, २५ दिसम्बर, को हर साल रोते हैं दुखी होते हैं ईसाईयों को कोसते हैं तो हम, ईसा मसीह के जन्म दिवस की खुशियाँ, क्यों मनाएँ? सोचिए। **इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर**

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हों, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री। आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

धार्मिक आधार पर बांगलादेश में हिन्दुओं का सफाया व नरसंहार आज भी जारी एक ओर एथनिक क्लेन्जिंग, दूसरी ओर संवेदनशून्य सरकार और निष्क्रिय सहधर्मी

हरिकृष्ण निगम

आज यह सर्वविदित है कि वर्तमान बांगलादेश की सरकार के द्वारा नए मित्रतापूर्ण रुझानों के बावजूद अवैध ५ करोड़ बंगलादेशी घुसपैठिये इस देश के सीमावर्ती क्षेत्रों को जिस तरह असुरक्षित बना चुके हैं वह अकल्पनीय रूप से असम, बंगाल, बिहार का जनसांख्यिक संतुलन को भी बिगाड़ चुका है। यह सभी को ज्ञात है कि कांग्रेस व पूर्व संप्रग सरकार के सहयोगी दल, साम्यवादी व नक्सलवादी अराजकता के समर्थक बुद्धिजीवी योजनाबद्ध तरीकों से एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार करते रहे थे जिससे हवाला के साथ–साथ भारतद्रोही गतिविधियों को भी गुपचुप रूप से विदेशी लॉबियों के धन से पोषित कर रहे थे। कुछ दिनों पहले भारत और बांगलादेश की सम्पूर्ण सीमा को सील करना तो दूर उसकी परस्पर सुविधाजनक लेन–देन की सहमति ने यह कड़वा सम्भावित सत्य यथार्थ में बदल दिया है कि अगले १५ वर्षों में असम, बंगाल और पूर्वोत्तर के अन्य प्रदेशों के अधिकांश जिलों में मुस्लिम जनसंख्या ६० प्रतिशत से अधिक हो सकती है।

क्या हम बदले हुए माहौल में भूल सकते हैं कि सन १९६० में ही पूर्वी पाक का बेरूबाड़ी पर, १९८५ में बांगलादेश का न्यू मूर द्वीप और १९९२ में तीन बीघा द्वीप की २३.५०० वर्ग किलोमीटर भूमि पर अधिग्रहण के अलावा २०११ में भी असम व बंगाल का कुछ भूभाग बंगलादेश के अधीन ही नहीं हुआ, सारे सिलीगुड़ी गलियारे पर भी मुस्लिम जनसंख्या बढ़ने से वह खतरे में पड़ गया था।

जब से प्रसिद्ध लेखिका तस्लीमा नसरीन के उपन्यास 'लज्जा' और 'द्विखण्डिवा' आदि प्रकाशित हुए थे तब से एक लम्बे अन्तराल तक बांगलादेश में उनके विरुद्ध हत्या के फतवे जारी करने वाले धर्मान्ध रक्तपिपासुओं की माँगें आज तक नहीं थमी हैं। साथ ही विश्वभर में इसके विरुद्ध प्रतिक्रिया तो हुई पर संवेदनशून्य भारत सरकार और यहाँ के किंकर्तव्यविमूढ़ बुद्धिजीवी लेखिका के विरुद्ध ही गोलबंदी करते दीखे। इसके साथ–साथ विश्व भर में बांगलादेश में हिन्दुओं का नरसंहार और धार्मिक आधार पर उनके सफाये–एथेनिक क्लेन्जिंग–पर विपुल साहित्य प्रकाशित हुआ तथा राष्ट्रसंघ व उससे जुड़े मानवाधिकार संगठनों ने इस पर गम्भीर चिन्ता प्रकट की, संकल्प पारित किए, जनमत बनाने के लिए आगे बढ़े पर तब तक भी हमने न तो सरकार की ओर से या निजी तौर पर किसी सांसद या सरकारी अधिकारी को सक्रियता व संवेदनशीलता दिखाते पाया या हमारे मीडिया के किसी कर्णधार की हाहाकारी मानसिकता का प्रदर्शन देखा जो वे बहुधा आतंकवादियों के बचाव में दिखाते रहते हैं।

उलटे हमने देखा कि आंध्रप्रदेश के तीन विधायक सैयद अहमद कादरी, अफसर खान और मोअज्जम खान सार्वजनिक मंच पर तस्लीमा को मार डालने का राग अलापते रहे। उनके नेता सुल्तान ओवेसी तो अपने साथियों को आयन्दा न चूकने की हिदायत भी देते रहे। फिर ऑल इंडिया इत्तेहाद मिल्लव काउंसिल के नेता तकी रजा खान तस्लीमा की हत्या के लिए करोड़ों के पुरस्कार घोषित करते रहे। जामा मस्जिद के इमाम बुखारी भी सार्वजनिक रूप से उसके विरुद्ध हिंसा का आह्वान करते रहे।

इस समय ऑल इंडिया मजलिस–ए–इत्तेहादुल मुस्लिमीन (ए.आई.एम.आई.एम.) फिर अपनी विषभरी घृणा की राजनीति पर इसलिए भी चर्चित है कि इसने मुम्बई में एक चुनावी विजय और हाल के दिल्ली के चुनावों में अपने कई प्रत्याशियों को मैदान में उतारा। मोहम्मद अली जिन्ना की तरह स्वतंत्र भारत में उनके पहले प्रेरक रजाकार कासिम रिजवी थे और उनके असली आदर्श थे अब्दुल वाहिद ओवैसी, सलाउद्दीन ओवैसी और असाउद्दीन ओवैसी।

देश के आज के प्रजातांत्रिक ढाँचे में यदि पाकिस्तान–परस्त मुस्लिम लीग के लोग यदि देश को एन अवतार में स्वीकृत होंगे और स्वपोषित सेकुलरवादियों द्वारा मुस्लिम सहायता का रंगमंचीय प्रहसन चलेगा तो आगे चलकर यह खतरनाक सिद्ध हो सकता है क्योंकि एक ओर मुस्लिम हिन्दुओं के विरुद्ध रणनीति के तहत देश के सेकुलरवाद के नाम पर डोरे डालेंगे और बर्बर कट्टरवादी संगठनों को भी उत्पीड़ित सिद्ध करने में प्रतिस्पर्द्धा करेंगे। पहले ही जैसे गुजरात दंगों पर मिथ्या शोक व 'सियापा' करने वाले हमारे बुद्धिजीवी बांगलादेशी हिन्दू नरसंहार पर चुप थे और यहाँ तक कि हमारे देश का सर्वोच्च न्यायालय भी बांगलादेशी हिन्दू नरसंहार पर स्वतः संज्ञान नहीं ले सका था आज फिर विश्व तो इस चले आए हिन्दू विनाश पर हमारी यादें ताजा कर रहा है पर हम सिर्फ उनकी कृतियों की झूठी प्रशंसा तो करते हैं पर अपनी तरफ से कुछ कहना नहीं चाहते हैं। हाल में डॉ. रिचर्ड एल. बेंकिन का सन २०१४ में ३५४ पृष्ठों का एक अधिकारिक ग्रंथ "एक क्वायेट केस ऑफ एथनिक क्लेंजिंग : द मर्डर को बांगलादे'ज हिन्दूज" अनेक अभिलेखों के साथ प्रकाशित हो चुका है, पर क्या हमारे देश की सत्तारूढ़ सरकार या विपक्षी दल, पूर्व संप्रग सरकार के झूठे दिलासे भरे भूखण्डों की अदला–बदली के संशयपूर्ण समझौतों को निरस्त करने की माँग करेगी? न हिन्दुओं की सुरक्षा न ही तस्लीमा जैसे लेखकों की सुरक्षा और पारम्परिक रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर वामपंथी तो आधुनिक इतिहास में नरसंहार के विषय में कई दबावों से सर्वाधिक बड़े प्रपंची सिद्ध होते रहे हैं।

आज तो स्वयं बांगलादेशी समाचार पत्र ही लिख रहे हैं कि प्रतिशोध की राजनीति में फिर हिन्दुओं की ही बलि चढ़ाई जा रही है। देश की प्रधानमंत्री शेख हसीना का अपना स्वयं बांगलादेश नेशनलिस्ट पार्टी की प्रमुख खालिदा जिया को 'विक्षिप्त' कहकर उसके दल की तुलना आई.एस.आई.एस. के दुर्दान्त जिहादियों से कर चुके हैं क्योंकि उनकी जमाते–इस्लामी के साथ हो रही सांठगांठ हिन्दुओं व अन्य जातियों का पहले भी सफाया करने की साजिश करती थी और आज भी वही कर रही है। ठाकुर गाँव, दिनाजपुर, रंगपुर, बोगरा, तालमोनिरहार, राजशाही, चटगाँव व जेसोर इत्यादि जिलों में हिन्दुओं पर क्रूरतापूर्ण हमले हुए हैं, मंदिर तोड़े गए हैं, महिलाओं के साथ हैवानियत की गई है। दूसरी ओर सीमावर्ती क्षेत्रों के मुस्लिमों के लिए भारत में पलक पावड़े बिछाने में हमारे नेता व अंग्रेजी पत्रों के सम्पादक गण जुटे हुए हैं।

हमारे पड़ोसी बांगलादेश में सब कुछ शांतिपूर्ण है और जब से प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने सीमा विवाद को परस्पर सहमति से अदला–बदली के समझौते से हल किया था दोनों देशों के बीच मैत्री संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं–यह हमारा व सरकार का भ्रम भी हो सकता है। वहाँ अंदरूनी अशान्ति की जैसे–जैसे नई परतें खुलकर सामने आ रही हैं, भारत के विरुद्ध हस्तक्षेप के आरोप लगाने वाले विपक्षी नेताओं की भी कमी नहीं है।

हाल में बांगलादेश की सेना ने दावा किया है कि वहाँ तख्ता पलटने की साजिश करने वाले एक सशस्त्र समूह को शीघ्रता से पकड़ लिया गया और सत्ता पर नियंत्रण करने के षड़यंत्र को तुरन्त विफल कर दिया गया था। जिसके बाद से स्थिति विस्फोटक रही है।

शेख हसीना वाजेद, प्रधानमंत्री के एक निकट के सलाहकार गौहर रिजवी ने सेना द्वारा इस षड़यंत्र के विफल किए जाने को स्वीकार करते हुए इसमें १६ लोगों को लिप्त बताया जो असंतुष्ट मध्य स्तर के सैनिक अधिकारी और विदेश में रहने वाले बांगलादेश के कुछ सेवानिवृत्त अधिकारी थे। गौहर रिजवी ने यह भी बताया कि जाँच में प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक पूरी सूची का पता लगा है जिनकी हत्या की जानी थी और उनमें उन बड़े सहयोगी सैन्य अधिकारियों के नाम भी थे जो उनके गुप्त सहयोगी भी थे। उन सब को धीरे–धीरे मृत्युदंड भी दिया गया है।

यदि हम शेख हसीना द्वारा प्रायोजित आज की बांगलादेश की प्रतिशोध, हिंसा व प्रतिबन्धों की राजनीति में न भी जाएँ तो भी गत चार दशकों से देश में दर्जनों तख्ता पलट के षड़यंत्रों और इसके मुक्ति आन्दोलन में पाकिस्तान का साथ देने वाले जमाएते इस्लामी के रक्तपात करने वाले कट्टरपंथी गुटों के असफल प्रकरणों की भरमार रही थी। शेख हसीना के स्वामीभक्त सैनिक जनरलों ने सन २०१२ से ही षड़यंत्रकारियों के दूसरों को विद्रोह के लिए भड़काने वालों पर उनके गुप्त ई–मेल या फेसबुक पर सम्पर्कों की जब खुफिया जाँच शुरू हुई उसी समय ऐसे अजीब विरोधियों की फेहरिस्त पूरी होते हुई उनकी पकड़–धाकड व विशेष न्यायालयों द्वारा त्वरित दंड देने का मन बना लिया गया था। एक बात यह भी पाई गई थी कि सभी साजिश करने वाले एक ही हिन्दू–विरोधी अतिरेकी धर्मान्ध विचारधारा के थे। वैसे सरकार औपचारिक रूप से पहले मात्र यही कहती थी कि शेख हसीना वाजेद की चुनावी जीत के बाद बनी सरकार को विरोधी दल बी.एन.पी. मुल्लाओं और बाहरी या पाकिस्तानी सैनिक सहायता से उसे उखाड़ फेंकना चाहते थे। जिन्हें भी सन २००० के बाद विशेषकर भर्ती किया गया है उनमें अधिकांश लोग वही हैं जो १९७१ के समय पाकिस्तान से पृथक होने के समय जनसंघर्ष में जनता का साथ नहीं दे रहे थे और जिन पर युद्ध अपराधी होने का मुकदमा चल रहा था।

आज अनेक बांगलादेशी पत्रकार यह भी कहते हैं कि बांगलादेश में टेलीफोन–वार्ता को सरकार टेप करती है और खुफिया एजेंसियाँ विरोधियों के पीछे छाया की तरह लगी रहती हैं तथा अनेक षड़यंत्रकारी विदेशों में छिपे हैं। 'विदेशों' का अर्थ भारत का 'कोलकाता' भी हो सकता है जहाँ कट्टरपंथियों से वे सहज सम्पर्क बना सकते हैं।

इशराक अहमद नाम के एक पूर्व उच्च अधिकारी, जिसके इस षड़यंत्र में शामिल होने का आरोप है वह इसको नकारते हैं पर साथ ही यह भी कहते हैं कि प्रधानमंत्री शेख हसीना भारत के हाथों बिक चुकी हैं। उन्होंने बांगलादेश को एक 'बन्टुस्तान' में बदल दिया है जो भारत द्वारा संचालित है। ढाका के कट्टरपंथी नेताओं की भारत पर लगांए आरोपों की सूची काफी लम्बी है और यदि उसके असली मन्तव्यों पर जाएँ तो वे प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद को भारत के जाल में फंसने के लिए देश का दुश्मन भी मानने लगे हैं। उनके अनुसार भारत की रिसर्च एंड एनालिसिस विंग ('रा') के जासूस बांगलादेश में फैले हुए हैं, पिछले दो वर्षों से भारतीय गुप्तचर एजेंसी 'रा' का कार्यालय शेष पृष्ठ 10 पर

खून की दलाली बनाम राजनीतिक स्यापा

अर्पण जैन 'अविचल'

दिल्ली से लेकर दंतेवाड़ा, मुंबई से लेकर मीरपुर और बंगाल से लेकर बारामूला तक हिंद के जनमानस में केवल और केवल 'सर्जिकल स्ट्राइक' ही बसा हुआ है। कुछ समय पहले सर्जिकल स्ट्राइक जिसकी परिभाषा से भी देश का वास्ता नहीं रहा उसी परिभाषा ने आज देश को सेना के प्रति जिम्मेदार बनाया है। सन १६७१–७२ के बाद और कारगिल युद्ध के समय सेना के प्रति राष्ट्रवासियों का प्रेम उमड़ा था, वही हाल आज सर्जिकल स्ट्राइक के बाद भी देश की जनता के है वही प्रेम, वही अपार स्नेह। किंतु जब राष्ट्रवासी सीमा के रक्षकों के त्याग का महिमामंडन कर रहे हों, उसी दौर में जिम्मेदार राजनीतिक दल के युवराज का बचकाना बयान कहीं ना कहीं उस दल के मानसिक अपरिपक्व होने का प्रमाण भी देता है। आज देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल होने का दंभ भरने वाली कांग्रेस के युवराज और कहे 'पीएम इन वेटिंग' की बदजुबानी सेना की सफलता के प्रचार को 'खून की दलाली' मान रहे हैं और खून के पीछे छिपे होने की बात कर, अमूल बेबी की भाँति ही व्यवहार कर रहे हैं। सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर पीएम मोदी पर निशाना साधने वाले राहुल गाँधी ना केवल अपनी अल्पबुद्धिा का परिचय दे चुके बल्कि विरोधियों द्वारा दिए नाम पप्पू की भी सार्थकता सिद्ध कर दी। सन २०१४ के लोकसभा चुनाव परिणाम आने के साथ–साथ ही देश में गैरजरूरी मुद्दों की राजनीति शुरू हो गई थी, बिहार चुनाव के पूर्व अवार्ड वापसी और विध्वा गेंग सक्रिय रही। यूपी में ढाई दशक बाद सत्ता वापसी की कोशिश में जुटी कांग्रेस के युवराज कुछ दिन पहले देवरिया से शुरू हुई किसान यात्रा पूरी कर दिल्ली पहुँचे थे, लेकिन राजधानी पहुँचते ही उन्होंने यह बयान देकर सब कुछ गुड़ गोबर कर दिया है। यूपी में सभाओं के दौरान सर्जिकल

स्ट्राइक के लिए सेना और केंद्र सरकार की तारीफ करने वाले राहुल गाँधी का नया अपरिपक्व दांव कांग्रेस के लिए भारी पड़ सकता है। बीजेपी ने कांग्रेस को याद दिलाया कि पूर्व में उसके नेताओं के ऐसे बयानों के बाद उनका क्या हश्र हुआ है। बेहद संगीन मुद्दों पर कांग्रेस नेता संजय निरूपम और आम आदमी पार्टी के नेता और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का सेना से सबूत माँगना और युवराज का इस तरह की राजनीतिक बयानबाजियाँ करना केवल दुश्मन देशों में किरकिरी कराने से ज्यादा कुछ नजर नहीं आ रहा।

विगत वर्षों में राजनीति केवल दोहरे चरित्र वाली ही मानी जा रही है, जैसे कुछ दिनों पूर्व ही युवराज ने सर्जिकल स्ट्राइक पर मोदी की भरसक तारीफ की थी, कहा था कि ढाई साल में पहली बार मोदी ने प्रधानमंत्री लायक कोई काम किया है, वहीं केजरीवाल भी खुले मन से सेना के समर्थन में आए थे। ना जाने ऐसा क्या हुआ इन नेताओं को जो हफ्ते भर में ही पलटी मारते हुए एक और केजरीवाल सेना से स्ट्राइक के सबूत माँगने लग गये और पाकिस्तानी मीडिया के सिरमौर बन गये वहीं दूसरी ओर राहुल गाँधी को मोदी खून के दलाल नजर आने लग गये। वैसे इतिहास की राजनीति में दलाली शब्द के जन्मदाता भी इसी गाँधी परिवार से निकले हैं। बोफोर्स कांड इसका प्रमाण है। फिर ना जाने कितनी खूनी मंजर, सन १६८६ का सिख नरसंहार भी शायद इसी श्रेणी में माना जाए। किन्तु इतिहास की किताबों से दूर राहुल की रणनीति केवल बोखलाहट ही नजर आ रही है। १६६० में, ''पंचशील'' की खुमारी के तहत नेहरू ने साफ कह दिया था कि **''हमको सेना नहीं पुलिस चाहिए''**, और सेना की 4th Division (about 32000 officers & men) को, पटियाला में, नागरिक आवास बनाने में लगा रखा था, इतना ही नहीं, फौज के तीनों अंगों को Joint Command करने वाले, Commander-Chief of Armed Forces को हटाकर, आर्मी, नेवी, ऐयर फोर्स के लिए अलग–अलग Chief of Staff नियुक्त कर दिया। १६४७–४८ में, कश्मीर एक्शन के दौरान, UNO में जाकर, फौज की जीती बाजी को नेहरू ने हार में बदल दिया और POK बनवा दिया, जो आज हमारा सरदर्द बना हुआ है। १६६२ में, नेफा और हिमालय की ऊँची पहाड़ियों पर, भारतीय फौज को चीन का सामना करना पड़ा और बुरी हार हुई, क्योंकि उस समय फौजियों के पास जूते और कपड़े भी नहीं थे, गोला बारूद की बात तो छोड़िये। १६६५ में, सैकड़ों सैनिकों की शहादत के बाद हमारी फौज ने, ''हाजीपीर प्रास'' को पाकिस्तानियों से जीता था, जिसको किसी भी कीमत पर लौटाया नहीं जा सकता था, क्योंकि इसी के पास से सारे आतंकी भारत में घुसते हैं, इतने महत्त्वपूर्ण ''हाजीपीर पास'' को इंदिरा गाँधी ने पाकिस्तान को लौटा दिया, जो सेना की कुर्बानियों का सरासर अपमान ही था, और उसी इंदिरा गाँधी का पोता आज कहता है कि भाजपा ''खून की दलाली'' कर रही है। अब इस परिपक्व अमूल बेबी से घृणा करे या दया...? जिसे इस राष्ट्र का भूगोल, इतिहास नहीं मालूम, जो किसानों के हितार्थ यात्रा निकालने का ड्रामा कर रहा हो और आलू की फैक्ट्री लगाने की बात करता हो इससे ज्यादा उम्मीद भी क्या की जा सकती है। समय परिवर्तन का है किंतु परिवर्तन कांग्रेस में इस तरह से आएगा सियासी पंडितों के भी समझ से परे है। युवराज का जिस तरह से प्रधानमंत्री मोदी को खून की दलाली में लिप्त कह कर भारतीय सेना को अपमान अर्पण करना केवल राजनीतिक स्यापा ही है समय रहते कांग्रेस ने यदि इस भूल को नहीं संभाला तो दहाई के अंकों में सिमटी कांग्रेस के बुरे दिन फिर कोई रोक नहीं सकता।

कलकत्ता में अगस्त १६४६ में मुस्लिम लीग द्वारा सीधी कार्यवाही

(मुम्बई में सन् १६४६ में सीधी कार्यवाही का प्रस्ताव पारित होने के तत्काल बाद एक प्रान्तीय कार्यवाही समिति का गठन किया गया।

समिति में सम्मिलित थे—ममदोत के खान इफ्तिखार हुसेन खाँ अध्यक्ष; राजा गजनफर अली खाँ, संयोजक; सरदार शौकत हयात खाँ, मलिक फिरोज खाँ नून, शेख करामत अली, मियाँ इफ्तिखारुद्दीन एवं मियाँ अब्दुल अजीज सदस्य। इनके अतिरिक्त कार्यवाही की केन्द्रीय समिति में होने के नाते पदेन सदस्य मियाँ मुमताज दौलताना भी सम्मिलित हुए। कोलकाता से सीधी कार्यवाही के लिए एक २३ सूत्री योजना प्राप्त हुई, जिसको लीग के कार्यकर्ताओं को संप्रेषित कर दिया गया। योजना के अन्तर्गत गैर–मुसलमान लोगों पर छुरे से वार कर घायल करना, उनके घर जला देना और उन्हें डराने–धमकाने के विस्तृत निर्देश योजना में दिये गये हैं।)

निम्नलिखित परिपत्र की मुद्रित एवं साइक्लोस्टाइल्ड प्रतियाँ भारत के मुसलमानों में गुप्त रूप से वितरित की गई थीं :

१. भारत के सभी मुसलमानों को पाकिस्तान के लिए मृत्यु का वरण करना चाहिए।

२. पाकिस्तान की स्थापना के साथ ही सम्पूर्ण भारत को जीत लेना होगा।

३. भारत के सभी लोगों को इस्लाम में धर्मान्तरित कर लेना होगा।

४. सभी मुस्लिम–राज्यों को मिलकर सम्पूर्ण विश्व का शोषण करने वाले आंग्ल–अमेरिकन गठजोड़ के साथ हाथ मिला लेना चाहिए।

५. एक मुसलमान को पाँच हिन्दुओं के बराबर अधिकार प्राप्त करना चाहिए अर्थात् प्रत्येक मुसलमान पाँच हिन्दुओं के बराबर है।

६. जब तक पाकिस्तान और भारत के राज्यों की संस्थापना नहीं हो जाती, तब तक निम्नलिखित पग उठाये जाने चाहिए—

अ. हिन्दुओं के सभी कारखानों एवं उनकी सभी दुकानों को जलाकर नष्ट कर देना चाहिए, उन्हें लूट लेना चाहिए एवं लूट का माल लीग के कार्यालय में दे देना चाहिए।

ब. स्थापित व्यवस्था के विरोध में लीगियों को शस्त्र उठा लेना चाहिए।

स. जो राष्ट्रवादी मुसलमान लीग से नहीं जुड़ रहे, उन सबको लीगी गुप्तचर संगठन 'गेस्टापो' द्वारा मार डाला जाना चाहिए।

द. धीरे–धीरे हिन्दुओं की हत्या करनी चाहिए और उनकी जनसंख्या कम कर देनी चाहिए।

क. सभी मन्दिर ध्वस्त कर देना चाहिए।

ख. प्रत्येक गाँव और जिले में लीग के गुप्तचर नियुक्त होना चाहिए।

ग. गुप्त–प्रक्रिया के अंतर्गत कांग्रेस नेताओं की हर एक महीने में एक के क्रम से हत्या कर देनी चाहिए।

घ. कांग्रेस के प्रमुख कार्यालयों को गुप्त मुस्लिम–संगठन 'गेस्टापो' द्वारा विनष्ट कर दिया जाना चाहिए। एक ही व्यक्ति इसे करे।

ङ. मुस्लिम लीग के स्वयंसेवक दिसम्बर, १६४६ तक कराची, मुम्बई, कोलकाता, मद्रास, गोवा, विजगापटम को ठप कर दें।

च. किसी भी मुसलमान को, सेना, नौसेना, प्रशासन एवं व्यक्तिगत संस्थानों में हिन्दुओं के अधीन कभी काम नहीं करने देना चाहिए।

छ. मुसलमानों को भारत पर निर्णायक अंतिम आक्रमण के उद्देश्य को लेकर कांग्रेस सरकार तथा सम्पूर्ण भारत को पूरी तरह ध्वस्त कर देना चाहिए।

ज. मुस्लिम लीग आर्थिक संसाधन दे रही है। निजाम, कम्युनिस्ट, कुछ यूरोपियन, भोपाल से खोजा लोग, कुछ एंग्लो–इंडियन, कुछ पारसी तथा कुछ ईसाई; इन सभी के द्वारा भारत पर हमला किए जाने के दौरान मुस्लिम लीग द्वारा आक्रमण कर, भारत में मुस्लिम राज्य स्थापित करने के लिए पंजाब, सिन्ध और बंगाल में लीगियों के लिए सभी प्रकार के अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण किया जाएगा।

झ. जहाँ–जहाँ मुस्लिम लीग है, उन सभी स्थानों (मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, मद्रास, बेंगलूर, लाहौर, कराची) पर सभी प्रकार के अस्त्र–शस्त्र वितरित कर दिये जाने चाहिए।

ञ. मुस्लिम लीग के सभी अनुभागों से सम्बद्ध लोगों को कोई न कोई छोटा–मोटा हथियार रखना चाहिए। सभी हिन्दुओं को भारत से खदेड़ने या उन्हें विनष्ट करने के उद्देश्य से कम से कम एक जेबी चाकू अवश्य रखना चाहिए।

त. यातायात के सभी स्थान और साधनों का प्रयोग हिन्दुओं से युद्ध करने में करना चाहिए।

थ. अक्टूबर, १६४६ से हिन्दू स्त्रियों और लड़कियों का अपहरण और बलात्कार कर उन्हें मुसलमान बना लेना चाहिए।

द. हिन्दू संस्कृति नष्ट कर दी जानी चाहिए।

ध. सभी लीगियों को चाहिए कि वे हर समय हिन्दुओं से क्रूरता का व्यवहार करें; उनका सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य तरीकों से बहिष्कार करें।

न. किसी भी मुसलमान को हिन्दू की दुकान से सामान नहीं खरीदना चाहिए। हिन्दुओं द्वारा निर्मित सभी फिल्मों का बहिष्कार कर देना चाहिए। सभी मुस्लिमलीगियों को इन निर्देशों का पालन करना चाहिए और १५ सितम्बर, १६४६ से पूर्व तक इन्हें कार्यरूप में परिणत कर देना चाहिए।

वन्दे मातरम् एण्ड इस्लाम

प्रो० ए०पी० सारस्वत

आज विश्वव्यापी आतंक प्रतिवर्ष नित नई घटनाओं के द्वारा विकराल रूप धारण कर मानवता को काल का ग्रास बना रहा है, वैसे तो भारत विगत १३०० वर्षों से इस्लामी जिहाद के साथ जूझता रहा है, "परन्तु समस्त विश्व का ध्यान दिनाँक ११/९/२००१ को अमरीका में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर जिहादी हमले के बाद इस्लामी कट्टरता की ओर आकर्षित हुआ है, क्योंकि इस जघन्य अपराध में लिप्त सभी मुसलमान थे, इसलिये सभी का ध्यान इस्लाम की ओर आकर्षित हुआ। इस घृणित, जघन्य एवं अमानवीय जिहादी काण्ड के लिये इस्लामी धर्मान्धता को दोषी ठहराया गया जो कि इस्लामी जिहाद के नाम पर हत्या, हिंसा और आतंकवाद को प्रोत्साहित करती है।" **(डॉ० के० वी० पालीवाल, जिहाद और गैर मुस्लिम, पृ० १)**

"इस्लाम का अत्यावश्यक मिशन पूरे विश्व को इस्लाम मे दीक्षित करना है–कुरान, हदीस, हिदाया और सिरातुन्नबी, जो इस्लाम के चार बुनियादी ग्रन्थ हैं, मुसलमानों को इसके आदेश देते हैं, इसलिये मुसलमानों के मन में पृथ्वी पर कब्जा करने में कोई संशय नहीं रहा। हिदाया स्पष्ट रूप से काफिरों पर आक्रमण करने की अनुमति देता है, भले ही उनकी ओर से कोई उत्तेजनात्मक कार्यवाही न भी की गई हो।

अब्दल रहमान अज्जम का कथन– जब मुसलमान मूर्तिपूजकों और बहुदेवतावादियों के विरुद्ध युद्ध करते हैं तो वह भी इस्लाम के मानव भ्रातत्ववाद के महत्वपूर्ण सिद्धान्त के अनुकूल ही होता है। मुसलमानों की दृष्टि में, देवी–देवताओं की पूजा से निकृष्ट विश्वास दूसरा नहीं है। मुसलमानों की आत्मा, बुद्धि और परिणति इस प्रकार के निकृष्ट विश्वास धारियों को अल्लाह के क्रोध से बचाने के साथ जुड़ी हुई है। जब मुसलमान इस प्रकार के लोगों को मानवता के नाते अपना बन्धु कुबूल करते हैं, तो वे अल्लाह के कोप से उनको बचाने को अपना कर्त्तव्य समझकर उन्हें तब तक प्रताड़ित करते हैं, जब तक कि वे उन झूठे देवी–देवताओं में विश्वास को त्याग कर मुसलमान न हो जायें। इस प्रकार के निकृष्ट विश्वास को त्याग कर मुसलमान हो जाने पर वे भी दूसरे मुसलमानों के समान व्यवहार के अधिकारी हो जाते हैं। इस प्रकार के निकृष्ट विश्वास करने वालों के विरुद्ध युद्ध करना इस कारण से एक दयाजनित कार्य है क्योंकि उससे समान भ्रातत्ववाद को बल मिलता है।

जमाते इस्लामी के संस्थापक सैयद अबू आला मोदूदी बल प्रयोग को इसलिए उचित ठहराते हैं कि "जो लोग ईश्वरीय सृष्टि के नाजायज मालिक बन बैठे हैं और खुदा के बन्दों को अपना बंदा बना लेते हैं, वे अपने प्रभुत्व से, महज नसीहतों के आधार पर, अलग नहीं हो जाये करते, इसलिये मौमिन (मुसलमान) को मजबूरन, जंग करनी पड़ती है, ताकि अल्लाह की हुकूमत (इस्लामी हुकूमत) की स्थापना के रास्ते में जो बाधा हो, उसे रास्ते से हटा दे।" (सबसे पहला दस्तूर जमायते इस्लामी (१९४१) मु० बि० ला०–११, पृ० ५८) यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि इस्लाम के अनुसार पृथ्वी के वास्तविक अधिकारी अल्लाह, उसके रसूल मौहम्मद और उनके उत्तराधिकारी मुसलमान ही हैं।" (सही मुस्लिम, ४३६३ तथा डॉ० हर्ष नारायण जिजिया)। इनके अतिरिक्त, "जो भी गैर–मुस्लिम शासक हैं, वे मुसलमानों के राज्यापहरण के दोषी हैं। अपहरण की गई अपनी वस्तु जो पुनः प्राप्त करने के लिये लड़ा जाने वाला युद्ध तो सुरक्षात्मक ही होता है।" **(पुरुषोत्तम, भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज, पृ० १ ता ३)**

अनवर शेख का कथन – "पैगम्बर मौहम्मद प्रस्तुतीकरण के स्वामी थे, उनमें अकूत क्षमता थी कि एक छुरी को बढ़ते हुए चन्द्रमा की भाँति प्रस्तुत कर सके, जिसके कारण इस्लाम को शान्ति के रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहे, यद्यपि यह व्यवहार में निकृष्ट प्रकार का आतंक है। कुरान खुले शब्दों में प्रारम्भ होती है कि "अल्लाह को न मानने वाला दुश्मन हैं (२:६०)। इस प्रकार वह सभी न मानने वालों को, जो बहुमत में हैं, जहन्नुम की दहकती अग्नि में फेंक देगा जहाँ "वह (जहन्नुम से घिरा व्यक्ति) पीने को रसने वाली मवाद का सा पानी दिया जायेगा, जिसे वह कठिनाई से घूंट–घूंट करके पिएगा और ऐसा नहीं लगेगा कि वह आसानी से उतार सकता है और मृत्यु हर ओर से चली आती रहेगी फिर भी वह मेरगा नहीं और उसके सामने कठोर यातना होगी (**Q** १४:१६–२०) इस प्रकार इस्लाम ने पूरी मानवता को दो भागों में बांट दिया है: हिजाबुल्ला (अल्लाह की पार्टी) व हिश्ब–उस–शैतान (शैतान की पार्टी) (**Q** ५८:२०) ईमानवालों उनसे लड़ना जारी रखे जब तक वे युद्ध में मारे न जाए या अधीन होकर जिजया न देने लगे (**Q** ६:२५)।" **(अनवर शेख, इस्लाम एण्ड टेररिज्म, पृ० v)**

हर एक व्यक्ति जो अरब नहीं है, पर मुसलमान है व धर्मान्तरित व्यक्ति है। भारतीय मुसलमानों के पूर्वजों ने मजबूरी में इस्लाम धर्म को तो कबूल कर लिया, परन्तु उन्होंने कभी भी भारतीय संस्कृति का त्याग नहीं किया। जिसके माध्यम से वे अपने पूर्व मूल–धर्म व राष्ट्र से सदैव जुड़े रहे। अतः भारतीय मुसलमानों

MAD-ARSA MENTALITY

को चाहिये कि वे अरबी संस्कृति /अरबी दिखाई दिये जाने से परहेज करे तथा भारतीय संस्कृति को अपनाये, ताकि उनका अरबीकरण न हो। अरबीकरण होने मात्र से राष्ट्रान्तरण भी हो जाता है।

"आधुनिक भारतीय नेतृत्व और छद्म–सैक्यूलर मीडिया का यह बुनियादी विश्वास है कि वे इस्लाम, उसके पैगम्बर और उसकी धर्म पुस्तक की प्रशंसा द्वारा भारत और अन्यत्र के मुसलमानों को नियंत्रित कर सकते हैं। इस्लामी राज्यों के द्वितीय स्तर के गैर–मुसलमानों नागरिकों का भी वास्तव में यही विश्वास है, जो जिजिया कर देकर और इस्लाम की प्रशंसा करके अपने जीवन की रक्षा करते हैं। इसी मानसिक गुलामी के रवैये को 'धिम्मीपन' कहते हैं। ये छद्म–धर्म निरपेक्षतावादी धिम्मी लोग यह आसानी से भूल जाते हैं कि गाँधी ने भी सचमुच यही किया था और वास्तव में यही कारण है कि गाँधी जी असफल रहे। धिम्मीपन कभी भी लाभकर नहीं होगा।

सेक्यूलर मीडिया ने देश में विद्यमान वर्तमान स्थिति को समझने के लिए एक कपटी शब्दावली का आविष्कार कर भारत के राजनैतिक माहौल को भ्रष्ट कर दिया है। यह धोखेबाजीपूर्ण बनावटी भाषा हिन्दुओं को धोखा देने का उनका प्रमुख हथियार है। उनके दोमुखी ऑलेखियन कथनों को नंगा करना आवश्यक है।

आप मीडिया द्वारा संचालित भ्रमात्मक और बनावटी भाषा के स्थान पर विकल्प के रूप में सही शब्दावली का प्रयोग कर इन जुबानी हथियारों को निरर्थक बना सकते हैं। उदाहरण के लिए आप निम्नलिखित शब्दावलियों का प्रयोग करें–

१. 'कश्मीरी आतंकवादी' के स्थान पर **'मुस्लिम आतंकवादी।'**

२. 'पथभ्रष्ट और बेरोजगार नौजवान' के स्थान पर **'कुरान द्वारा भली-भाँति पंथ प्रदर्शित और अल्लाह की सेवा में नियुक्त।'**

३. 'इस्लामी कट्टरपंथवाद' के स्थान पर **'इस्लाम'।**

४. 'पाकिस्तानी आतंकवाद' के स्थान पर **'इस्लामी आतंकवाद।'**

५. 'कश्मीरी प्रवासी' के स्थान पर **'जातीय विनाश के हिन्दू शिकार।'**

६. 'उदार इस्लाम' के स्थान पर **'अवसरवादी इस्लाम।'**

७. 'सूफी इस्लाम' के स्थान पर **'इस्लाम का मुखौटा।'**

८. 'मानवीय अधिकार' के स्थान पर **'आतंकवादी अधिकार।'**

९. 'मध्यकालीन मुस्लिम शासन' के स्थान पर **'इस्लामी काला युग।'**

१०. 'मिली–जुली संस्कृति' के स्थान पर -**'अवैध सभ्यता एवं अव्यावहारिक संस्कृति।'**

११. 'सर्व–धर्म समभाव' के स्थान पर **धिम्मीपन या 'धर्म-अधर्म समभाव'।**

१२. 'सेक्यूलर' के स्थान पर **'धिम्मी'।**

१३. 'सेक्यूलरिज्म' के स्थान पर **'छद्म सेक्यूलरिज्म' या 'साम्प्रदायिक धर्मनिरप्रेक्षवाद'।**

१४. 'वामपंथियों और साम्यवादियों' के स्थान पर **'इस्लाम के एजेन्ट या 'ठेकेदार'।**

१४. 'हिन्दू सम्प्रदायवाद' के स्थान पर **'राष्ट्रवाद'।**

१५. 'हिन्दू दक्षिणपंथी, प्रतिक्रियावादी और पुनर्जागरणवादी के स्थान पर **'राष्ट्रवादी'।**

१६. 'भगवाकरण' के स्थान पर **'राष्ट्रीयकरण'।**

१७. 'धर्म–निरपेक्षीकरण या सेक्यूलरीकरण' के स्थान पर **'अराष्ट्रीयकरण'।**

वस्तुतः सही शब्दावली का प्रयोग ही छद्म –निरपेक्षवादी 'धिम्मीपन' और मुस्लिम पाखंड का निश्चित प्रतिकार है। जब भी, और जहाँ कहीं भी, शुद्ध शब्दावली का उपयोग न हो, वहाँ आपत्ति करो।

छद्म –सेक्यूलरवादी धिम्मियों की दूसरी घटिया तरकीब यह है कि पाकिस्तान पर तो दोषारोपण करो, परन्तु इस्लाम को आतंकवादी अपराधों के किसी भी अभियोगों से पृथक् कर, उसे मुक्त रखो।

सेक्यूलरवादियों से कुछ प्रश्न?

: छद्म सेक्यूलरवादी निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देकर अपने मुस्लिम भाईयों की और अधिक सहायता कर सकते हैं–

१. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र लोकमंत्र की धारणा के अनुरूप हैं?

२. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र धर्म निरपेक्षतावाद की धारणा के अनुरूप हैं?

३. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र सार्वभौम मानवाधिकारों की धारणा के अनुरूप हैं? शेष पृष्ठ 10 पर

सन्त रविदास जी के कुछ प्रेरक प्रसंग

✍ डॉ. सुशील गुप्ता

चमत्कारी मिट्टी के लड्डू - रविदास जी बाल्यावस्था में शाम को बच्चों के साथ खेलते समय भी ईश्वर की आराधना को खेल–खेल में करते। इसमें प्रभु का सुमिरन करते समय शब्द कीर्तन व आरती की जाती और प्रसाद रूप में मिट्टी के लड्डू बनाकर बांटते। जो बच्चे सच्चे हृदय से भक्ति करते उनके मिट्टी के लड्डू असली के बन जाते और अविश्वासियों के लड्डू मिट्टी के ही रहते। कुछ अविश्वासी बच्चों ने अपने माता पिता से मिट्टी के लड्डू की शिकायत की। ऐसा ही एक दीनानाथ नामक अभिभावक हाथ में लाठी लेकर बालक रविदास के पास जा पहुंचा, जो उस समय अपने बाल सखाओं के साथ भक्ति कर रहे थे। उनकी अमृतवाणी सुनकर दीनानाथ भी भक्ति में रमकर बालकों के साथ बैठ गया। आरती समाप्त होने के बाद अपने आने का उद्देश्य स्मरण कर जब दीनानाथ प्रसाद के मिट्टी के लड्डू के थाल पर पैर मारने लगा, तो अचानक वह असली लड्डू बन गये। और दीनानाथ रविदास के प्रति श्रद्धाभाव के साथ वापस आ गया।

Shri Guru Ravidass Ji Maharaj

नाग की छतरी - बालक रविदास एक बाग में काल पाड़िया नामक एक खेल दोपहर में खेलते–खेलते थक विराम करने लगे। दोपहर में सूर्य की किरणें खिसककर सोते हुये रविदास के चेहर पर पड़ने लगी। निकट ही एक सांप की बॉबी थी। उसमें से एक नाग निकल कर रविदास के पास पहुंच गया, और उनके सिरहाने फन फैलाकर बैठ गया, जिससे बालक रविदास के चेहरे पर छाया हो गयी। इससे वह बालक आराम से सोता रहा। कुछ बालकों ने यह दृश्य देखकर चीखते हुये उनके घरवालों को बुलवा लिया। माता करमा देवी सहित सभी लोग यह सब देखकर हैरान रह गये। उन सबको देखते ही नाग वापस बॉबी में चला गया।

गोपाल को जीवनदान - रविदास के बाल सखाओं में एक गोपाल नामक उच्च, धनी परिवार का मित्र भी था। एक दिन वे सब खेल रहें थे। जब गोपाल की बारी आयी तो वह बोला– ''देर हो गयी है इसलिये मैं अपनी बारी कल आकर खेलूंगा।'' परन्तु दूसरे दिन गोपाल की सांप के कांटने से मृत्यु हो गयी थी। बालक रविदास वहां पहुंचे और बालस्वभाव में उस मृत शरीर से कहा कि– ''अरे तू सो रहा है, वहां आज तेरी पारी के इन्तजार में खेल रुका पड़ा है। चल मेरे साथ।'' इतना कहते ही मृत गोपाल उठकर जीवित हो गया और रविदास के साथ चल दिया। यह चमत्कार देखकर सब चकित रह गये। वह गोपाल करीब सौ वर्ष की आयु तक जीवित रहा।

शेर द्वारा नमस्कार - बालक रविदास के ज्ञान, भक्ति व चमत्कारों को देखकर कई बालकों–मित्रों तक ने उन्हें अपना गुरू मान लिया था। ऐसा ही एक भक्त मित्र लालचन्द भी था। जो उच्च वर्ग का था। रविदास से मित्रता व भक्ति न छोड़ने पर वहां के राजा हरदेव सिंह ने कुछ लोगों के कहने भड़काने पर लालचन्द को हाथ–पैर बांधकर भूखे शेर के सामने डालने का आदेश दिया। लालचन्द रविदास जी को याद करता हुआ मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। अपने भक्त मित्र की पुकार सुनकर रविदास जी ने परमेश्वर से लालचन्द को बचाने की प्रार्थना की। तुरन्त रविदास लालचन्द के सामने प्रकट हो गये, और लालचन्द को पुकार कर होश में ले आये तथा कहा, कि अब तुम्हें कोई नहीं मार सकता। उसी समय पिंजरे से बाहर निकला भूखा शेर रविदास जी को देखते ही ठिठक गया तथा शेर ने दोनों हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार किया। इसे देखकर शेर छोड़ने वाले हैराने रह गये क्योंकि रविदास जी किसी और को नजर नहीं आ रहे थे। अब शेर उल्टा उसको छोड़ने वाले पाखण्डियों पर ही झपट पड़ा।

साधुओं को भेंट - रविदास जी युवावस्था से ही अपने पिता के जूता बनाने–बेचने के व्यवसाय में योगदान देने लगे थे। एक बार पिता ने उन्हें २ जोड़ी जूते बेचने के लिये बाजार में भेजा, परन्तु दो साधुओं को गर्मी में नंगे पैर घूमते देखकर उन्होंने दोनों जोडी जूते साधुओं को दान दे दिये। वापस आकर पिता के पूछने पर बताया, कि मैने सच्चा सौदा कर दिया। इस प्रकार एक बार घर में आने वाले मेहमानों के लिये रखा खाने–पीने का सारा सामान माता पिता की अनुपस्थिति में साधुओं की टोली को दान कर दिया।

पारस पत्थर - एक बार भगवान साधु वेश में रविदास के पास आये और उनसे कहा कि यह पारस पत्थर (स्पर्श से लोहे को सोना बनाने वाला) रख लो। उनके इन्कार करने पर साधु ने कहा कि चलो रख लो एक वर्ष बाद आकर वापस ले लूंगा तो उन्होंने कहा कि स्वयं छप्पर में रख दो। एक वर्ष बाद साधु के वापस आकर पारस पत्थर मांगने पर उन्होंने कहा कि ''जहां रखा था, वहीं होगा''। साधु को देखकर बड़ी आश्चर्य हुआ, कि धूल में भरा हुआ वह पारस पत्थर वहीं रखा था वहां वह रखकर गये थे। तभी चमत्कार हुआ और साधु रूपी भगवान ने साक्षात स्वयं उन्हे दर्शन दिये।

विरोधी ब्राह्मण हुये परास्त - रविदास जी की कीर्ति से ईर्ष्या करने वाले काशी के कुछ ब्राह्मणों ने राजा हरदेव सिंह से उनकी झूठी शिकायते की। कहा कि रविदास न भक्त है, न ज्ञानी सन्त। अतः राजा ने शास्त्रार्थ द्वारा निर्णय करने का आदेश सुनाया। ब्राह्मणों व रविदास जी में शास्त्रार्थ तय हो गया तथा यह भी शर्त रखी गयी जिसकी गोद में भगवान आ जाये, वह विजयी माना जायेगा तथा दूसरा पक्ष और उसे सिंहासन पर बैठकार कन्धे पर उठाकर नगर भर में घुमायेगा। शास्त्रार्थ में कोई निर्णय न हो सका। फिर भगवान की आहवादन की शर्त आयी। ब्राह्मणों द्वारा आहवादन पर भगवान व उनका सिंहासन नहीं हिला, परन्तु रविदास जी के आहवादन पर भगवान सिंहासन समेत रविदास जी की गोद में आ गये। पूर्व शर्त के अनुसार उन शिकायती ब्राह्मणों ने रविदास जी को सिंहासन पर बैठकार पूरे नगर में सवारी निकाली।

साक्षात गंगा को भेंट - नित्य गंगा स्नान व पूजन को जाने वाले एक पुरोहित जी रविदास जी के पास गये, तो रविदास जी ने उन्हे एक सुपारी देते हुये कहा, कि यह मेरी भेंट गंगा जी को तभी अर्पित करना जब गंगा माता स्वंय प्रकट होकर अपने हाथ से भेंट स्वीकार करें। रविदास जी की यह भेंट गंगा को देते समय गंगा मैया से एक हाथ बाहर आया और उसने यह भेंट स्वीकार की। और बदले में एक सोने का कंगन दिया, ''यह रविदास को मेरे आर्शीवाद के रूप में दे देना।'' उस कंगन को देखकर पुरोहित की नीयत खराब हो गयी और उसने राजा को प्रसन्न करने के लिये उसे राजा को भेंट कर दिसा और राजा ने वह अपनी रानी को दे दिया। रानी ने वैसा दूसरा कंगन मांगा, तो राजा से डरकर पुरोहित ने राजा को सारी कहानी सुना दी। आश्चर्यचकित राजा–रानी रविदास जी की कुटिया पर गये और वैसा ही कंगन मांगा। रविदास जी ने कठौती में हाथ डालकर दूसरा कंगन उन्हें दे दिया। तभी से राजा रानी उनके शिष्य बन गये।

मुसलमान शासक भी हैरान - शासक सिकन्दर लोधी द्वारा रविदास के पास भेजे गये फकीर सदना कसाई के उल्टे रविदास जी का शिष्य बनकर हिन्दू रामदास शेष पृष्ठ 10 पर

बारा वफात पर हिन्दुओं के घर जलाए गए

दूरदर्शन के जी चैनल पर जानकारी दी गई कि १३ दिसम्बर को, पश्चिम बंगाल के, हावड़ा नगर के निकटवर्ती गांव में मौहम्मद साहब के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में जलूस निकल रहा था। उस जलूस में किसी शरारती तत्व ने एक बम फेंक दिया। संयोग से वह बम नहीं फटा फिर भी मुस्लिमों ने, हिन्दुओं के घरों में आग लगाकर समान जला दिया और तोड़–फोड़कर, नहीं जले समान को नष्ट कर दिया। गाँधीवादी हिन्दू अपने घरों को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले गए। जो समान ठीक था उसे अपने साथ साईकिलों से और रिक्शों से ले गए। जले हुए घर दूरदर्शन पर दिखाए गए। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस समाचार को न तो अखबारों में छपने भेजा और न ही दूरदर्शन को जानकारी दी। किसी अज्ञात व्यक्ति ने जी चैनल को जानकारी दी तब घटना का समाचार और जले हुए मकान जी चैनल ने दिखाए।

प्रतिक्रिया

१. जी चैनल पर कहा गया कि पश्चिम बंगाल पाकिस्तान बनता जा रहा है।

२. राज्य में रहने वाले हिन्दुओं का जान–माल सुरक्षित नहीं है।

३. जो भी सरकार आती है उसे हिन्दू हितों की कोई चिन्ता नहीं होती है। वह तो मुस्लिमों के कल्याण में लगी रहती है।

४. अब तो भाजपा भी मुस्लिम घुसपैठियों को निकालने के लिए नहीं कहती है बल्कि यह कहती है कि भाजपा के शासन में मुस्लिम अधिक सुरक्षित रहेंगे।

५. कितनी विचित्र बात है कि हिन्दू भयभीत होकर रह रहे हैं और वह मुस्लिमों को सुरक्षा देने के लिए कह रही है।

६. भाजपा को ज्ञात होना चाहिए कि मुस्लिम तो शस्त्रों से लैस हैं और अपनी सुरक्षा स्वयं करने में सक्षम हैं इसलिए पुलिस भी मुस्लिमों से डरती है। वह उनके क्षेत्रों से मार खाकर आती है।

७. भाजपा को निहत्थे–शस्त्रहीन–अहिंसक सोच वाले हिन्दुओं की रक्षा करने का कार्यक्रम बनाने चाहिए।

८. १६४७ में कांग्रेस तो पूरा बंगाल पाकिस्तान को देने के लिए तैयार हो रही थी क्योंकि वह शीघ्र स्वतन्त्रता चाहती थी।

६. हिन्दू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अथक प्रयासों से बंगाल का हिन्दू बहुल क्षेत्र, सीमा आयोग ने पाकिस्तान को नहीं दिया और वह क्षेत्र खंडित भारत में पश्चिम बंगाल के नाम से जाना जाता है। यह भारत का चौदहवाँ राज्य है।

१०. दुर्भाग्य से पश्चिम बंगाल में भी कांग्रेस का जोर रहा और राज्य की जनता ने केवल २–४ सांसद ही हिन्दू महासभा के चुने अन्यथा राज्य में कांग्रेस की ही सरकारें कई सालों तक बनती रहीं।

११. प्रथम मुख्यमंत्री नेहरू समर्थक डा० बी० सी० राय बने। वे नमाज पढ़नी भी जानते थे और आबादी की अदला बदली के पक्ष में नहीं थे।

१२. जब पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) १६४७ में बना तब वहां ३० प्रतिशत हिन्दू थे। उग्रवादी इस्लामी संगठन उन्हें परेशान करने लगे। मन्दिर तोड़ने लगे। जबर्दस्ती हिन्दू लड़कियों की शादियां मुस्लिम युवकों से कराने लगे। मन्दिरों और शमशान भूमि की खाली पड़ी जमीनों पर कब्जे करने लगे। छोटी मोटी लड़ाई होने पर छुरे बाजी और अवैध । शस्त्रों से मारने लगे। भयभीत होकर हिन्दू वहां से पलायन करने लगे। अब वहाँ ०८ प्रतिशत हिन्दू रह गए हैं।

१३. इसके विपरीत पश्चिम बंगाल में २२ प्रतिशत मुस्लिम थे जो अब २७ प्रतिशत हो गए हैं। यहां का भी मुस्लिम शेर और बिल्ली की भांति आक्रामक और हमलावर होकर रहता हैं और राज्य सरकारें मौन होकर आंखे बन्द कर लेती हैं। ईश्वर ही बंगाली हिन्दू को बेशक बचा लें अन्यथा बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल में हिन्दू भयभीत होकर रह रहा है। कम्युनिस्ट पार्टी और तृणमूल कांग्रेस भी हिन्दू विरोधी हैं।

१४. हमारा अनुरोध है कि वह डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी का अहसान माने और उनकी पार्टी हिन्दू महासभा को मजबूत करे अन्यथा मार ही खाते रहोगे।

सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री हरीश रावत जी,
माननीय मुख्यमंत्री,
उत्तराखंड।

विषय :- नमाज के समय डेढ़ घंटे के अवकाश देने के निर्णय को तत्काल बदलने तथा हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा के समय अवकाश देने की मांग।

महोदय,

जुमे की नमाज के समय उत्तराखंड में डेढ़ घंटे के अवकाश देने के अपने ताजा निर्णय का संज्ञान लें। यह निर्णय पूर्ण रूप से मुस्लिम तुष्टीकरण से जुड़ा है। इस निर्णय से बहुसंख्यक हिन्दू समाज को अत्यधिक पीड़ा हुई है। जुमे की नमाज के समय तो अवकाश दिया गया, परन्तु हिन्दू देवी–देवताओं की पूजा के समय कोई अवकाश नहीं दिया गया है। यह हिन्दू जनमानस की घोर अवहेलना है। देश के करोड़ों हिन्दू इस अपमान को स्वीकार नहीं करेंगें। कृपया राष्ट्रहित व हिन्दू हित में निम्नलिखित निर्णय तुरंत लेने की कृपा करें:–

१. जुमे की नमाज के समय अवकाश देने के निर्णय पर तुरंत रोक लगायें।

२. यदि यह निर्णय नहीं बदला गया, तो हिन्दुओं के देवी–देवता भगवान शिव की पूजा के लिये सोमवार, हनुमान की पूजा के लिये मंगलवार आदि दिन अवकाश घोषित किया जाये।

सादर,
भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक	मुन्ना कुमार शर्मा	वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 9 का
सन्त रविदास जी के कुछ....

बन जाने वह लोधी तथा उसे मुल्ला मौलवी चिढ़ गये। अतः सिकन्दर लोधी ने रविदास जी को गिरफ्तार कराकर दरबार में कहा कि, " एक मुसलमान (सदना) को हिन्दू बनाने की सजा मौत होती है। बोला क्या चाहते हो–इस्लाम या मौत। यदि मुसलमान बन जाओगे, तो इनाम में पांच गांव की जागीर भी दूंगा।" परन्तु रविदास जी ने इस्लाम स्वीकारने से साफ इन्कार कर दिया। रविदास जी की प्रसिद्धि को देखते हुये सिकन्दर लोधी ने उन्हें न मारकर जेल में डलवा दिया। परन्तु इसके बाद सोते, जागते, नमाज पढ़ते, महल में, दरबार में आदि सब जगह रविदास जी ही दिखायी देने लगे। इससे बादशाह घबराकर चिन्तित हो गया और उसने रविदास जी को छोड़कर क्षमा मांग ली।

चित्तौड़ में चमत्कार - चित्तौड़गढ़ के राजा राणा सांगा की रानी झाली रानी ने अपने गुरू रविदास जी को अपने यहां आमंत्रित किया। जहां उनका खूब आदर सत्कार हुआ। राजा–रानी ने एक बड़ा यज्ञ सम्पन्न किया। जब भोजन प्रारम्भ हुआ तो कुछ ब्राह्मणों ने रविदास जी के साथ बैठकर भोजन करने से इंकार कर दिया। रानी को बहुत चिन्ता हुयी क्योंकि इन सबके भोजन न करने पर यज्ञ अपूर्ण होने का भय था, साथ ही गुरू रविदास के अपमान का भी भय हो गया। परन्तु रविदास जी रानी की इस दुविधा को जानकर ब्राह्मणों से अलग अन्य लोगों के साथ भोजन करने लगे। परन्तु भोजन आरम्भ होते ही उन दंभी ब्राह्मणों ने देखा कि प्रत्येक ब्राह्मण के अगल बगल बैठे कई रविदास उसी पंक्ति में भोजन कर रहे हैं। वे ब्राह्मण तथा राणा सभी यह देखकर हैरान रह गये तथा उन्होंने रविदास जी से क्षमा मांगी। अन्त में रविदास जी ने उपस्थित ब्राह्मणों के सामने अपनी खाल चीरकर अपने अन्दर सोने का जनेऊ दिखाया। अन्त तक रविदास जी चित्तौड़ में ही रहे तथा वही उनका स्मारक "रैदास छतरी" बनी हुयी है। अपनी मृत्यु से २१ दिन पूर्व ही रविदास जी ने अपनी मृत्यु की घोषणा अपने अनुयायियों के बीच कर दी थी। ठीक २१ वें दिन (सन् १५२६ ई.) रविदास जी एक सफेद चादर ओढ़कर लेट गये। कुछ देर पश्चात जब चादर उठाकर देखा गया, तो वहां कुछ फूल ही शेष पड़े थे। जबकि गुरू रविदास जी सशरीर उस परम ज्योति में समय गये थे। उन फूलों को ही अन्तिम यात्रा के रूप में जनसमूह के बीच ले जाया गया था। इस अन्तिम यात्रा में सभी मत पन्थों के लोग शामिल हुये थे।

शेष पृष्ठ 6 का
धार्मिक आधार पर बांगलादेश में.....

ढाका में बांगलादेशी गुप्तचर मुख्यालय के भवन से ही कार्य कर रहा है। साथ ही संचार माध्यम के रूप में भारत के लिए एक "डाइरेक्ट सबमेरीन केबिल" की भी व्यवस्था है। भारत उनके देश की 'इलेक्ट्रानिक सर्वेलेन्स' कर रहा है और बंगलादेशी नगरों से संदेहजनक व्यक्तियों का अपहरण भी कर लेते हैं। बंगलादेशी गुप्तचर एजेंसियों व भारत की खुफिया एजेंसियों में पूरा तालमेल है। कुछ नेता शेख हसीना वाजेद की सरकार पर यह आरोप भी लगा चुके हैं कि–जिसकी भी दाढ़ी है और जो भी इस्लामी आस्था का पालन करता है उसे बदनाम कर तालिबान की तरह चित्रित किया जाता है। सन २०१३ के बाद के चुनावों के पश्चात यह कहा जा रहा है कि उनकी लोकप्रियता पहले की ८१ प्रतिशत से गिरकर मात्र ४० प्रतिशत रह गई है। साफ है कि न ही उनकी अपनी जनता और न ही भारतवासी उनकी प्रतीकात्मक मैत्री से खुश हैं। चाहे भारत के पूर्व जनरल एस.के. सिन्हा को अपने देश के सर्वोच्च न्यायाधीश पद का सम्मान ही वे दें पर हिन्दू नरसंहार आगे आने वाले झंझावातों के स्पष्ट संकेत बने रहेंगे। बांगलादेश में उठने वाले कुछ अन्य विवादों में सम्पत्ति के मौलिक अधिकारों के खतरे में पड़ने की बात भी उठ रही है। इसका प्रमुख कारण बांगलादेश के सर्वाधिक प्रसिद्ध और चर्चित नागरिक मोहम्मद युनूस को लेकर है जिन्हें २००६ में नोबेल शान्ति पुरस्कार ग्रामीण बैंक की संस्थापना और उसकी अभूतपूर्व सफलता के लिए मिला था। सन १९८३ में ग्रामीण विपन्न महिलाओं को छोटे–छोटे ऋण देने के लिए यह माइक्रोफाइनेन्स के क्षेत्र में विश्वभर में एक उदाहरण माना जाता है। आज ग्रामीण बैंक की छत्रछाया में ४८ से अधिक छोटी–बड़ी कम्पनियाँ कार्यरत हैं। जिसमें टेक्सटाइल से लेकर मोबाइल कम्पनियाँ तक कार्यरत हैं। सरकार की नजरों में यह वर्चस्व खटक रहा था। कदाचित इसीलिए मई २०११ में सरकार ने उन्हें ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष पद से हटा दिया। कारण सिर्फ यह बताया गया कि बैंक अध्यक्ष के पद के लिए प्रस्तावित आयु से ऊपर होने के कारण वे इस पद पर नहीं रह सकते। मुहम्मद युनुस इसे किसी बहाने से ग्रामीण नेटवर्क को हड़पने की साजिश कहते हैं जिसकी कुल पूँजी लगभग १.६ बिलियन डालर तक पहुँच गई है क्योंकि इस ग्रामीण बैंक के विदेशी भागीदार भी हैं इसलिए पश्चिमी देशों ने भी सरकार के मन्तव्यों पर चिंता व्यक्त की है। यदि सरकार एक नोबेल पुरस्कार विजेता द्वारा स्थापित किए हुए महत्त्वपूर्ण संस्थान को हड़प सकती है तब सरकार की विश्वसनीयता और पारदर्शिता पर भी प्रश्न उठाए जा सकते हैं। बांगलादेश आने वाले समय में किन–किन अनिश्चिताओं से गुजर सकता है, यह अनुमान लगाए जा रहे हैं। पर भारत में सरकार और मीडिया का एक बड़ा वर्ग दोस्ती का लगातार राग अलाप रहा है। हमारे देश के एक कथित बड़े अंग्रेजी पत्र ने पाकिस्तानी दैनिक जंग के सहयोग से जो 'अमन की आशा' का संयुक्त कार्यक्रम चलाने के बाद अब बांगलादेश के साथ 'मैत्री बंधन' का उसी प्रकार का अभियान चला रखा है। आज हम कितनी ही राजनीतिक सीमाओं व विवशताओं पर बहस करते रहें पर सच तो यह है कि डॉ. रिचर्ड एल. बेकिन के उपर्युक्त ग्रंथ के इस निष्कर्ष की अवहेलना नहीं कर सकते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय इस्लाम की जिहादी महामारी पर बांगलादेशी हिन्दू निशाने पर रहे हैं और ऐसा उदाहरण आधुनिक सभ्यता के इतिहास में ढूँढना मुश्किल है। यह भारत की सनातन संस्कृति का कभी अनसुना, कभी मुखर उन विचारधाराओं के विरुद्ध संघर्ष भी रहा है जो हमें नींद में लाने वाले कथित बहुसंस्कृतिवाद, राजनीतिक औचित्य अथवा सेकुलरवाद के कवच के पीछे से सिखाया जाता रहा है।

शेष पृष्ठ 8 का
वन्दे मातरम् एण्ड इस्लाम......

४. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र गैर–मुसलमान 'अल्पसंख्यकों के अधिकारों' की धारणा के अनुरूप हैं?

५. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र 'स्त्री– अधिकारों' की रक्षा के अनुरूप हैं?

६. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र विवेचन एवं तर्क की स्वतन्त्रता और विचार प्रकट करने के अधिकार की धारणा के अनुरूप हैं?

७. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र 'राष्ट्रवाद' की धारणा के अनुरूप हैं?

८. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र 'सूक्ष्म और कलाओं' जैसी चित्रकारी, शिल्पकारी, नृत्य, ड्रामा, फिल्म और संगीत आदि की धारणाओं के अनुरूप हैं?

९. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र आधुनिक अर्थव्यवस्था के अनुरूप हैं?

१०. क्या इस्लामी धर्मशास्त्र तर्कशास्त्र, बुद्धिवाद और विज्ञान के अनुरूप हैं?

यदि हैं, तो किस तरह? अगर नहीं, तो क्यों नहीं? आखिर नाजीवाद और फासिज्म जैसी सर्व–सत्तात्मक विचारधाराएँ बुरी, पर इस्लाम अच्छा है, क्यों? जब भी, और जहाँ भी आप सेक्यूलरवादी धिम्मियों से मिलें, उनका सामना उपरोक्त प्रश्नावली और कुरान की एक प्रति के साथ करें, और उनकी बौद्धिक बेईमानदारी को नंगा करें। हिन्दू पूर्वजों के मतान्तरित ६५ प्रतिशत भारतीय मुसलमान इस धर्म संकट के जाल से इस्लाम की प्रकृति पर स्वतंत्र, उचित और स्पष्ट बहस के द्वारा ही बाहर निकल सकते हैं, अन्यथा नहीं। लेकिन गाँधी, नेहरू, कांग्रेस की मिथ्या तुष्टीकरण और धिम्मीपन के सहारे कभी नहीं। (शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 1 का
बालवीर हकीकत राय बलिदान....

सुब्रहमण्यम पोट्टी, उमेश त्यागी, शिवनाथ शर्मा, अर्जुन सिंह, विनोद दूबे, विजय मिश्रा सहित, सैकडों हिन्दू महासभा पदाधिकारी, कार्यकर्ता, समाजसेवी व गणमान्य लोग सम्मिलित हुए।

दिनांक 15 फरवरी से 21 फरवरी 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
पंचमी	15 फरवरी	बुधवार
अष्टमी	19 फरवरी	रविवार
दशमी	21 फरवरी	मंगलवार

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह 2017

देश भक्ति पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए बच्चे

मनमोहक नृत्य प्रस्तुत करते हुए स्कूल के बच्चे

देश भक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए अमय त्यागी

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक का सम्बोधन

राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा का सम्बोधन

समारोह में उपस्थित जन समूह

साध्वी पूजानन्द गिरि का सम्मान

बैंक मैनेजर नवीन त्यागी का सम्मान

समृति चिन्ह प्रदान करते हुए हिन्दू महासभा के पदाधिकारी

धर्मपाल गोयल का सम्मान

हिन्दू महासभा चैनल का उद्घाटन करते हिन्दू महासभा नेता

हिन्दू महासभा के वरिष्ठ पदाधिकारियों का सम्मान

पुरस्कृत किए गये बच्चों के साथ हिन्दू महासभा के पदाधिकारी

पुरस्कृत किये गये बच्चों के साथ राष्ट्रीय महामंत्री

पुरस्कृत किए गये बच्चों के साथ हिन्दू महासभा के पदाधिकारी

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह 2017

प्रवीन त्यागी को सम्मानित करते हिन्दू महासभा पदाधिकारी

देश भक्ति पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए बच्चे

हिन्दू महासभा के पदाधिकारियों का सम्मान

हिन्दू महासभा कार्यकर्त्ताओं का सम्मान करते राष्ट्रीय पदाधिकारी

हिन्दू महासभा कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

प्रतियोगिता के निर्णायक मडल सदस्यों को सम्मानित करते हिन्दू महासभा नेता

राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री व राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री का सम्मान

हिन्दू महासभा पदाधिकारियों का सम्मान

कबिरा खड़ा बजार में

अनदेखी पड़ रही जान पर भारी

भाग्य भरोसे जी रहे भारतीयों के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण खबर आई। उत्तरप्रदेश के एटा में एक स्कूली बस और रेत से भरे ट्रक की आपसी भिड़ंत में कम से कम २५ बच्चों की मौत हो गई, जबकि कई बच्चे गंभीर रूप से घायल हैं। जो बच्चे इस दर्दनाक दुर्घटना में बच गए, उन्हें सौभाग्यशाली माना जा सकता है कि मौत के मुंह से जिंदा वापस आ गए। ज्ञान की किताबों में केवल भाग्य के भरोसे रहने को कमजोरी कहा गया है। लेकिन क्या करें, आम इंसान कमजोर नहीं है, पर प्रशासन अपनी कमजोरी उस पर इतनी हावी कर देता है कि वह जो मिल जाए उसे अपनी किस्मत मानता है, और न मिले तो बजाए असल दोष ढूंढने के किस्मत को कोस कर मन शांत कर लेता है। बच्चे को स्कूल में दाखिला मिल गया। अच्छी किस्मत थी। अस्पताल में मरीज के लिए बिस्तर उपलब्ध हो गया, ईश्वर को धन्यवाद। पढ़–लिख कर नौकरी मिल गई, तो सौभाग्य की बात। सफर बिना किसी कष्ट के पूरा हो गया तो अच्छी किस्मत और बिना किसी दुर्घटना के सही सलामत घर आना तो किसी मन्नत के पूरा होने जैसा हो गया है। किस्मत और सौभाग्य–दुर्भाग्य जैसे शब्दों से परे हटकर सोचें तो हमारी बहुत सी परेशानियों के लिए लचर प्रशासन ही जिम्मेदार होता है, जिसे बेईमानी और ज्यादा कमजोर बनाती है। उत्तरप्रदेश की यह ताजा दुर्घटना इसका उदाहरण है। बीते एक हफ्ते में उत्तरप्रदेश में स्कूली वाहनों के तीन हादसे हुए हैं। बच्चों को ले जा रहे आटो की दुर्घटना हुई, मथुरा के पास एक गांव में स्कूली वैन पलट गई, और अब एटा की यह बस दुर्घटना सामने है। ठंड और कोहरे के कारण उत्तरप्रदेश में कई स्थानों पर स्कूलों को २० तारीख तक बंद रखने के आदेश थे। एटा में भी यही आदेश लागू था। लेकिन जे एस विद्या मंदिर का प्रबंधन शायद खुद को प्रशासन से ऊपर समझता था, या उसे बच्चों के स्वास्थ्य से अधिक पढ़ाई की चिंता है या उस पर तथाकथित रसूखदार लोगों का वरदहस्त है कि वह खुलेआम नियमों की अवहेलना करेगा और उस कोई आंच नहीं आएगी। जब कोई हादसा होता है, तब इन बातों पर ध्यान जाता है, अन्यथा हम रोजाना ही देखते हैं कि सडकों पर वाहन नियमों की अनदेखी कर कितने धड़ल्ले से चलते हैं। स्कूली बसों के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने बाकायदा दिशा–निर्देश जारी किए हैं लेकिन देश के अधिकतर स्कूली वाहन इनकी अवहेलना करते मिलेंगे। रोजाना ही दुर्घटनाओं को निमंत्रण देने के अंदाज में वाहन बच्चों को लेकर निकलते हैं और यातायात पुलिस उस ओर आंखें मूंदे रहती है। कभी कोई बड़ी दुर्घटना होती है, तो दो–चार दिनों की सख्ती के बाद वही ढाक के तीन पात दिखाई देते हैं। अगर कड़ाई बरती जाती तो हर साल इस तरह के हादसों की खबर नहीं आती। कभी स्कूल बस पुलिया से गिरती है, कभी ट्रेन से टकराती है, कभी ट्रक से भिड़ती है तो कभी तेज रफ्तार के कारण अनियंत्रित होकर पलटती है। बच्चों को उतारते और चढ़ाते वक्त उन पर वाहन चढ़ाने की भीषण घटनाएं भी हुई हैं। ये सब उदाहरण है हमारी लापरवाही का, जो बच्चों की जान पर भारी पड़ रही है। अपनी कमजोरी के लिए किस्मत को कसूरवार ठहराने से बेहतर है जो बिगड़ा है उसे सुधारा जाए और सुधारने के लिए आवाज उठाई जाए।

वीरेश त्यागी

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई   डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 8 फरवरी से 14 फरवरी 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011.23365138, 23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।